सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 12 ● अंक 175 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, शनिवार 1 अगस्त, 2026
मूल्य ₹ 3/-

नागरिकता देश की सेवा में निहित है।
-जवाहरलाल नेहरु

भारत ने पहली बार जूडो में दो स्वर्ण जीत रचा... 7 | पेपर लीक के बाद हुए आंदोनल... 3 | सपा ई20 से पूरी तरह से आजाद... 2

जेन जी गुमराह... या बदलाव की चाह?

जेन जी को गुमराह बता कर फंस गये पीएम मोदी

» क्या हम किसी एक वायरल घटना के आधार पर पूरी पीढ़ी का मूल्यांकन कर सकते हैं?

» गुमराह या जागरूक? जेन-जी पर छिड़ी बहस सिर्फ एक बयान की नहीं, पूरे दौर की कहानी है

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जंतर-मंतर की घटनाओं पर प्रतिक्रिया देते हुए एक वीडियो संदेश जारी किया है। विडियो संदेश में उन्होंने कहा है कि अभद्र भाषा का इस्तेमाल करने वाले युवा गुमराह बच्चे हैं। उन्होंने जेन जी को दंड के बजाए उन्हें माफ कर देने और उनमें सुधार पैदा करने की बात कही है। पीएम मोदी ने सजा की जगह संवाद और सुधार पर जोर दिया है।

वहीं खुद को गुमराह का टाइटल मिलने से जेन जी का गुस्सा उबाल पर आना शुरू हो गया है और सोशल मीडिया पर वह खुद को जागरूक बेबाक और लोकतंत्र की नई आवाज बता रहे हैं। वीडियो अपलोड होने के बाद गुमराह शब्द ने एक व्यापक सार्वजनिक बहस को जन्म दे दिया है। और सवाल उठ रहे हैं कि क्या यह टिप्पणी कुछ लोगों तक सीमित थी या इससे पूरी जेन जी को लेकर एक धारणा बनती है?

अपने वीडियो संदेश में क्या कहा है पीएम मोदी ने?

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक वीडियो संदेश साझा करते हुए जंतर मंतर पर हुई घटना पर प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि जंतर-मंतर पर जो कुछ भी हुआ उसे पूरे देश और दुनिया ने देखा। प्रधानमंत्री ने कहा कि कुछ शरारती बच्चों ने बेहद अभद्र और असभ्य भाषा का प्रयोग किया जो किसी भी सभ्य समाज को शोभा नहीं देता। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि उन्हें व्यक्तिगत रूप से गालियां दी गईं और उनकी दिवंगत माता के लिए भी अत्यंत आपत्तिजनक शब्दों का इस्तेमाल किया गया। उन्होंने कहा कि घटना का स्वरूप बेहद दुखद था लेकिन वह इस मुद्दे पर किसी के प्रति कटुता नहीं बल्कि सुधार और सकारात्मक सोच के साथ बात करना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि बचपन में गलतियां होना स्वाभाविक है और बचपन की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि उसमें गलतियों को सुधारने का अवसर भी होता है। उन्होंने कहा कि समाज के भीतर इस घटना को लेकर जो आक्रोश है उसे वह भली भांति समझ सकते हैं। उनके अनुसार यह एक कल्चरल शॉक है कि देश की बेटियां इस प्रकार की भाषा का प्रयोग कर सकती हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह समय इन बच्चों को गले लगाकर उन्हें सही रास्ता दिखाने का है। उन्होंने कहा कि यह गुमराह बच्चे हैं और उन्हें सही दिशा देना पूरे समाज की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि इन बच्चों को सजा देना अदालतों के चक्कर कटवाना या समाज में प्रताड़ित करना परिस्थितियों को नहीं बदल सकता। उन्होंने कहा कि मैं उन्हें माफ करना चाहता हूं। समाज भी मेरी इस भावना को स्वीकार करे क्योंकि मेरे मन में एक ही भाव है। कभी कभी दांतों तले हमारी जीभ आ जाती है खून भी निकल आता है लेकिन हम दांत नहीं तोड़ते क्योंकि दांत भी हमारे हैं जीभ भी हमारी है और बच्चे भी हमारे हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि गुमराह लोगों को सही राह दिखाना आसान काम नहीं होता लेकिन कठिन कार्यों को ही करने का संकल्प लेना चाहिए।

बयान के खिलाफ युवाओं में उबाल वीडियो जारी कर पीएम ने की थी टिप्पणी

कुछ युवाओं की गलती करोड़ों युवाओं की पहचान नहीं बन सकती

> बचपन में गलतियां होना स्वाभाविक है और बचपन की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि उसमें गलतियों को सुधारने का अवसर भी होता है।
>
> नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री, भारत

क्या सिर्फ जेन जी गालीबाज है?

यह भी सच है कि सोशल मीडिया ने संवाद की संस्कृति को बदला है। त्वरित प्रतिक्रिया, ट्रोलिंग, वायरल विलप और एल्गोरिदम अक्सर भाषा को अधिक आक्रामक बना देते हैं। यह समस्या केवल जेन जी तक सीमित नहीं है गौर से देखे और विषलेशण करें तो आप राजनीति मनोरंजन की दुनिया और मीडिया समेत समाज के दूसरे सेक्टर में भी ऐसा ही माहौल पाएंगे। जेन जी ने जिस भाषा का इस्तेमाल किया है और उसे आलोचना का शिकार होना पड़ा रहा है और गुमराह बच्चों के टाइटल से दोचार होना पड़ रहा है। दरअसल जो वह कर रहे हैं जैसा वह कह रहे हैं वह सबकुछ उन्होंने टीवी पर राजनीति में और मीडिया में देखा है। चैनल की डिबेट किस स्तर पर पहुंच चुकी है। चुनावी रैलियों और भाषणों में नेताओं के वक्तव्यों का क्या स्तर है यह सभी को पता है। तो फिर आमर्यादित भाषा के लिए गुमराह सिर्फ जेन जी को क्यों कहा जाए क्या हम सब गुमराह नहीं। संबंधित खबरें 8 पर भी

जेन जी की समस्याओं पर देना होगा ध्यान

युवाओं की वास्तविक चिंताओं पर भी ध्यान देना होगा। रोजगार कौशल विकास शिक्षा की गुणवत्ता प्रतियोगी परीक्षाओं की पारदर्शिता तकनीकी बदलाव कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव और मानसिक स्वास्थ्य यह वह विषय हैं जिन पर लगातार चर्चा होती रही है। यदि इन मुद्दों पर संवाद मजबूत होगा तो राजनीतिक संवाद भी अधिक रचनात्मक बन सकता है। पालिटिक्ल लीडरशिप की जिम्मेदारी केवल प्रेरित करना नहीं बल्कि सुनना भी है। उसी तरह नागरिकों की जिम्मेदारी केवल सवाल पूछना नहीं बल्कि मर्यादा बनाए रखना भी है। लोकतंत्र तब मजबूत होता है जब सत्ता आलोचना को सुनती है और समाज आलोचना को सभ्य भाषा में व्यक्त करता है। इस पूरे घटनाक्रम ने एक और प्रश्न सामने रखा है कि क्या हम किसी एक वायरल घटना के आधार पर पूरी पीढ़ी का मूल्यांकन कर सकते है? किसी भी समाज में कुछ लोगों का व्यवहार पूरे समाज का प्रतिनिधित्व नहीं करता। उसी तरह कुछ युवाओं की गलती करोड़ों युवाओं की पहचान नहीं बन सकती।

जेन जी कंपनियां भी बना रही है और रिसर्च भी कर रही है

भारत की जेन जी विरोध भी करती है नवाचार भी करती है। यही पीढ़ी नई कंपनियां बना रही है शोध कर रही है खेलों में देश का प्रतिनिधित्व कर रही है सामाजिक अभियानों का नेतृत्व कर रही है और लोकतंत्र में सक्रिय भागीदारी निभा रही है। इसलिए उसकी तस्वीर एक रंग में नहीं बनाई जा सकती। आज आवश्यकता लेबल लगाने की नहीं संवाद बढ़ाने की है। यदि भाषा बिगड़ी है तो उसे सुधारा जाना चाहिए। यदि असहमति है तो उसे सुना जाना चाहिए। यदि भ्रम है तो तथ्य सामने रखे जाने चाहिए। और यदि भरोसा कम हुआ है तो उसे संवाद के माध्यम से ही मजबूत किया जा सकता है। शायद यही इस बहस का सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष है। सवाल केवल यह नहीं कि जेन जी गुमराह है या नहीं। असली सवाल यह है कि क्या भारत अपनी सबसे बड़ी युवा आबादी को सुनने समझने और उसके साथ मिलकर भविष्य बनाने के लिए तैयार है। लोकतंत्र की शक्ति इसी संतुलन में है जहां मर्यादा भी बनी रहे और सवाल पूछने की आजादी भी।

जेन जी बोले तो स्पष्ट सोच- समर्थन भी विरोध भी

भारत दुनिया के सबसे युवा देशों में है। करोड़ों युवा उच्च शिक्षा, रोजगार, प्रतियोगी परीक्षाओं, डिजिटल अर्थव्यवस्था और तेजी से बदलती सामाजिक परिस्थितियों के बीच अपना भविष्य बना रहे हैं। यही पीढ़ी देश की सबसे बड़ी कार्यशील आबादी भी है। इसलिए जब युवाओं के बारे में कोई व्यापक टिप्पणी होती है तो उसका असर केवल राजनीति तक सीमित नहीं रहता वह समाज और नीति निर्माण तक जाता है। इसमें कोई विवाद नहीं कि व्यक्तिगत अपमान गाली गलौज और अभद्र भाषा सार्वजनिक जीवन में स्वीकार्य नहीं हो सकती। लोकतांत्रिक असहमति और व्यक्तिगत अपमान के बीच स्पष्ट रेखा होनी चाहिए। यदि कोई उस सीमा को पार करता है तो उसकी आलोचना स्वाभाविक है। लेकिन उतना ही जरूरी यह भी है कि असहमति को केवल भटकाव या गुमराही मान लेने से बचा जाए। आज की जेन जी पहले की पीढ़ियों से अलग है। यह इंटरनेट के साथ बड़ी हुई है। इसे सूचना तक तत्काल पहुंच मिली है। यह वैश्विक घटनाओं से तुरंत जुड़ जाती है। यह सरकारों की उपलब्धियों की सराहना भी करती है और कमियों पर सवाल भी उठाती है। यही पीढ़ी किसी नीति के समर्थन में अभियान चला सकती है और अगले ही दिन किसी दूसरी नीति का विरोध भी कर सकती है।

सपा अभी ई-20 से पूरी तरह से आजाद है साइकिल की रफ्तार तेज है : अखिलेश यादव

» सपा प्रमुख ई-20 और एथेनॉल नीति को लेकर भाजपा सरकार पर बरसे

» जब गोली चलवाने में शाह नहीं दोषी तो नेता जी कैस दोषी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने एक बार फिर से केंद्र सरकार की ई-20 और एथेनॉल नीति को लेकर तीखा हमला किया। यूपी के पूर्व सीएम ले तंज कसते हुए अपने सोशल मीडिया अकाउंट एक्स पर कहा कि सपा को ई-20 से पूरी तरह से आजाद है, क्योंकि साइकिल की रफ्तार तेज है।

सपा मुखिया ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर ई-20 और एथेनॉल नीति पर तंज कसते हुए कहा कि साइकिल की रफ्तार जोरदार है क्योंकि साइकिल ई-20 से आजाद है। अखिलेश यादव इससे पहले भी एथेनॉल पर सवाल उठाते गुए इसे मुनाफाखोरी का नया नाम बताया था। वहीं राज्य सभा में सपा ने गोलीकांड पर बोला जब अमित शाह दोषी नहीं तो मुलायम सिंह भी नहीं। बता दें कि देशभर में इन दिन

एथेनॉल का मुद्दा गर्माया हुआ है. सोशल मीडिया से लेकर तमाम जगहों पर इसकी चर्चा हो रही है और लोगों के अंदर एक भ्रम की स्थिति बनी हुई हैं. इससे ख़ासतौर से वो लोग परेशान हैं जिनकी गाड़ियां पुरानी है. दावा है कि एथेनॉल की वजह से गाड़ियों के इंजन और उसकी माइलेज पर भी असर देखने को मिल रहा है।

मुद्दों पर कोई जवाब नहीं दे रही है सरकार

अखिलेश यादव का कहना है कि सरकार एथेनॉल के फायदे तो बता रही है लेकिन गाड़ियों में माइलेज कम होने और उनकी जल्दी खराब होने जैसे मुद्दों पर कोई जवाब नहीं दे रही है।

राज्यसभा में उठा ई-20 का मुद्दा

वहीं ये मुद्दा राज्यसभा में भी उठाया गया, जब सीपीआईएम ने ई-20 ईंधन से गाड़ियों पर पड़ने वाले असर को लेकर केंद्र सरकार से सवाल किया. विपक्ष के सवालों का जवाब देते हुए केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि ई-20 एथेनॉल मिश्रित पेट्रोल को लेकर परामर्श किया गया है। गडकरी ने दावा किया कि रिसर्च में सामने आया है कि बीएस-5 मानक वाले दोपहिया और चारपहिया वाहनों में ई-20 उपयोग से उत्सर्जन निर्धारित मानकों के अनुरूप रहा और इंजन में किसी बड़े बदलाव की आवश्यकता नहीं पड़ी. इंजन के घिसाव में कोई महत्वपूर्ण समस्या नहीं पाई गई।

सपा ने निकाली जनक्रांति यात्रा

लखनऊ। अकबरपुर रनियां विधानसभा के अंतर्गत 'जनक्रांति यात्रा' समाजवादी पार्टी के नेता नीरज सिंह गौर के द्वारा निकाली गई, जिसकी शुरुआत कारी कलवारी स्थित कृष्णा गार्डन में पूर्व मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव व स्व. राम स्वरूप सिंह गौर पूर्व मंत्री एवं पूर्व विधायक उत्तर प्रदेश सरकार के चित्र पर माल्यार्पण करके की गई। कार्यक्रम में दिलीप सिंह कल्लू यादव पूर्व एमएलसी, वीरसेन यादव, लखन सिंह, वेद व्यास निराला, समरथ पाल, आनंद यादव एवं अन्य वरिष्ठ नेता गण मौजूदा रहे। रैली का उद्देश्य बढ़ती महंगाई, भ्रष्टाचार, किसानों को खाद ना मिलना, क्षेत्र में थमी विकास की रफ्तार पर ध्यान दिलाना था।

आकाश आनंद को लेकर भ्रम फैलाया जा रहा है : मायावती

» बोलीं- प्रदेश में उम्मीदवार मैं ही तय कर रही

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) सुप्रीमो मायावती ने उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव की तैयारियों और पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक आकाश आनंद की भूमिका को लेकर सोशल मीडिया पर चल रही चर्चाओं पर स्थिति स्पष्ट की है। उन्होंने कहा कि यूपी में विधानसभा चुनाव के उम्मीदवारों का अंतिम फैसला वही कर रही हैं और अब तक करीब दो दर्जन से अधिक उम्मीदवार तय किए जा चुके हैं।

मायावती ने कहा कि आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारियों के तहत लखनऊ स्थित पार्टी प्रदेश कार्यालय में कई राज्य स्तरीय बैठकें उनके द्वारा ली जा चुकी हैं। इन बैठकों में प्रदेश और मंडल स्तर के पदाधिकारियों को उम्मीदवार चयन के संबंध में दिशा-निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने बताया कि उम्मीदवारों के इंटरव्यू आदि की प्रक्रिया के बाद अब तक 20 से अधिक प्रत्याशियों को अंतिम रूप दिया जा चुका है और आगे भी सभी

संत रविदास नगर के नाम बहाली का स्वागत किया अन्य जिलों के पुराने नाम बहाल करने की मांग

बसपा प्रमुख मायावती ने संत रविदास नगर का नाम बहाल किए जाने का स्वागत करते हुए उत्तर प्रदेश सरकार से अन्य जिलों के भी पुराने नाम बहाल करने की मांग की है। शुक्रवार को सोशल मीडिया मंच एक्स पर किए गए पोस्ट में उन्होंने कहा कि बसपा सरकार ने प्रशासनिक व्यवस्था मजबूत करने और जनहित को ध्यान में रखते हुए कई नए जिले बनाए थे, जिनका नाम संतों, महापुरुषों और समाज सुधारकों के नाम पर रखा गया था। जैसाकि मीडिया की ख़बरों से सर्वविदित है कि यूपी की वर्तमान सरकार ने, बी.एस.पी. सरकार द्वारा भदोही को राज्य मुख्यालय का दर्जा देते हुये संत रविदास नगर के नाम से नया जिला बनाया था और जिसे समाजवादी पार्टी (सपा) की सरकार ने अपनी संकीर्ण जातिवादी मानसिकता के तहत् बदल दिया था। मायावती ने आरोप लगाया कि समाजवादी पार्टी की सरकार ने जातिवादी सोच और संकीर्ण राजनीति के चलते संत रविदास नगर, छत्रपति शाहूजी महाराज नगर, भीमनगर और अन्य जिलों के नाम बदल दिए थे। उन्होंने कहा कि अब संत रविदास नगर का नाम बहाल होने के बाद सरकार को मान्यवर कांशीराम और अन्य महापुरुषों के नाम पर बनाए गए जिलों के मूल नाम भी पुनः बहाल करने चाहिए।

विधानसभा सीटों पर उम्मीदवार तय हो चुके हैं

उन्होंने कहा कि जिन विधानसभा सीटों पर उम्मीदवार तय हो चुके हैं, वहां उनकी अनुमति से पार्टी के वरिष्ठ पदाधिकारी जनसभाएं कर प्रत्याशियों का ऐलान कर रहे हैं। इसी क्रम में आकाश आनंद भी कुछ सीटों पर पार्टी की जनसभाओं के माध्यम से उम्मीदवारों की घोषणा करेंगे।

सीटों पर उम्मीदवारों का फैसला उनके स्तर से ही होगा। मायावती ने कहा कि आकाश आनंद को लेकर तरह-तरह के भ्रम फैलाए जा रहे हैं, जिनमें कोई सच्चाई नहीं है। उन्होंने स्पष्ट किया कि देश में विधानसभा या लोकसभा चुनावों के दौरान उम्मीदवारों को अंतिम रूप देने का अधिकार उनके पास ही रहता है।

चंद्रशेखर ने जारी की 45 प्रभारियों की सूची

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। आजाद समाज पार्टी ने उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 27 की तैयारियों को तेज करते हुए 45 विधानसभा

» 27 चुनाव के लिए आजाद समाज पार्टी ने कसी कमर

सीटों के संभावित प्रत्याशियों और प्रभारियों की पहली सूची जारी की। पार्टी ने अनुसूचित जाति, पिछड़ा वर्ग, मुस्लिम और सिख समाज से जुड़े नेताओं को जिम्मेदारी देकर संगठन मजबूत करने और व्यापक सामाजिक समीकरण साधने पर जोर दिया।

आजाद समाज पार्टी (कांशीराम) ने चुनावी अभियान को गति दे दी है। पार्टी ने विधानसभा की 45 सीटों पर संभावित प्रत्याशियों/प्रभारियों की पहली सूची जारी की है। सूची के जरिए पार्टी ने चुनाव से पहले संगठन को मजबूत करने के साथ सामाजिक समीकरण साधने की कोशिश की है। पार्टी की पहली सूची में अनुसूचित जाति (एससी), अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी), मुस्लिम और सिख समाज से जुड़े नेताओं को प्रमुख जिम्मेदारियां दी गई हैं। पार्टी का कहना है कि सूची में बहुजन समाज के विभिन्न वर्गों को प्रतिनिधित्व देने का प्रयास किया गया है।

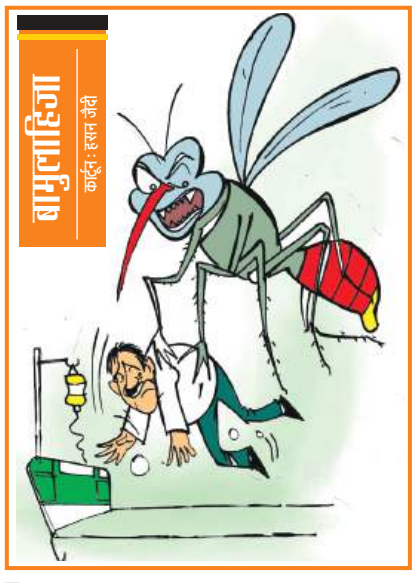

रालोद ने भी विस चुनाव के लिए कसी कमर

» भाजपा प्रदेश अध्यक्ष से मिले कार्यकारी अध्यक्ष

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। राष्ट्रीय लोकदल के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष अनुपम मिश्रा ने भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी से मुलाकात की। दोनों नेताओं के बीच विस्तृत एवं महत्वपूर्ण बैठक हुई। आगामी उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव-27 को लेकर संगठनात्मक समन्वय तथा एनडीए को और अधिक सशक्त बनाने हेतु दोनों नेताओं के बीच काफी देर तक विस्तृत चर्चा हुई।

बैठक में इस बात पर विशेष बल दिया गया कि भारतीय जनता पार्टी एवं राष्ट्रीय

लोकदल के बीच संगठनात्मक स्तर पर संवाद और समन्वय को और अधिक प्रभावी बनाया जाए जिस पर दोनों नेताओं ने सहमति व्यक्त की कि प्रदेश स्तर के साथ-साथ जिला स्तर पर भी दोनों दलों के जिला अध्यक्षों एवं प्रदेश स्तर के पदाधिकारियों के बीच नियमित संवाद, सूचनाओं का त्वरित आदान-प्रदान तथा बेहतर समन्वय सुनिश्चित किया जाए, जिससे एनडीए की संगठनात्मक मजबूती और जनसंपर्क अभियान को ज़मीनी स्तर पर नई गति मिल सके।

बैठक के दौरान आगामी विधानसभा चुनाव-27 की तैयारियों, प्रदेश के बदलते राजनीतिक परिदृश्य तथा विशेष रूप से पूर्वांचल सहित पूरे उत्तर प्रदेश में राष्ट्रीय लोकदल के बढ़ते जनाधार और संगठनात्मक विस्तार पर भी गंभीरता से विचार-विमर्श हुआ। दोनों नेताओं ने एनडीए को और अधिक मजबूत, प्रभावी तथा जनविश्वास के अनुरूप आगे बढ़ाने के लिए समन्वित प्रयासों पर जोर दिया।

इस अवसर पर राष्ट्रीय लोकदल के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष अनुपम मिश्रा ने भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी को महान साहित्यकार मुंशी प्रेमचंद की जयंती के अवसर पर उनकी अमर कृति गोदान भेंट की। इस महत्वपूर्ण मुलाकात के दौरान राष्ट्रीय लोकदल के प्रदेश मीडिया प्रभारी मयंक त्रिवेदी एव अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित रहे।

पेपर लीक के बाद हुए आंदोनल के बाद केंद्र की भाजपा सरकार चौतरफा घिरी

- महाराष्ट्र से लेकर जम्मू-कश्मीर तक की पार्टियां उस पर हमलावर
- शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख बोले-भाजपा भगवान राम के साथ भी ''इस्तेमाल करो और छोड़ दो'' की नीति अपनाती है
- सीजेपी ने राकेश टिकैत से की मुलाकात
- पीडीपी पांच अगस्त को पूरे जम्मू-कश्मीर में जिला मुख्यालयों पर शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन करेगी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। नीट पेपर लीक के बाद हुए आंदोनल के बाद केंद्र की भाजपा सरकार चौतरफा घिर गई है। देश की हर विपक्षी पार्टी उसको घेर रही है। महाराष्ट्र से लेकर जम्म-कश्मीर तक की पार्टियां उस पर हमलावर है।

शिवसेना यूबीटी ने सांसद तोड़कर बढ़ाने की बजाए रोजगार बढ़ाने की बात करके उसके उपर तंज कसा है। वहीं जम्मूकश्मीर में नेंका जहां पीजेओके को लेकर भाजपा पर सवाल उठा रही है तो पीडीपी 5 अगस्त से धारा 370 के पक्ष आंदोलन करने की चेतवानी दे दी है। वहीं सीजेपी ने एक बार हल्ला बोलने की बात की है इसके लिए वह किसानों व अन्य की साथ लेने की चर्चा कर रहा है।

लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल को भी बोलने नहीं दिया जाता

उद्धव ने कहा कि लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी को भी बोलने नहीं दिया जाता। उन्होंने राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (नीट) प्रश्नपत्र लीक मामले को लेकर हुए छात्र आंदोलन और तत्कालीन केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग करने वाले युवाओं की भी सराहना की। उद्धव ने कहा कि जब सभी को लगने लगा था कि लोकतंत्र खत्म हो गया है, तब युवाओं ने अपने आंदोलन के जरिये उसमें नयी जान फूंक दी। महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि युवाओं में बढ़ते आक्रोश के लिए सरकार जिम्मेदार है। उन्होंने कहा कि देश ने देख लिया है कि जब युवाओं की आवाज को नजरअंदाज किया जाता है, तो उसके क्या परिणाम होते हैं। उद्धव ने कहा कि यदि युवाओं को ''कॉकरोच'' कहा जाएगा, तो उनका नाराज होना स्वाभाविक है।

किसानों और युवाओं के मुद्दों पर समर्थन दें सभी : दास

कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के प्रवक्ताओं ने भारतीय किसान यूनियन (बीकेयू) के नेता राकेश टिकैत से मुलाकात की है। यह मुलाकात ऐसे समय हुई है, जब हाल ही में छात्र आंदोलन स्थगित होने के बाद सीजेपी ने अपने आंदोलन को बड़े सामाजिक मुद्दों से जोड़ने के संकेत दिए हैं। सीजेपी के अनुसार, शिक्षा से जुड़े मुद्दों के साथ अब किसानों और युवाओं के सवालों को भी साझा मंच पर उठाया जाएगा। इसी मुद्दे को लेकर सीजेपी नेताओं ने राकेश टिकैत से समर्थन मांगा। उम्मीद की जा रही है कि भारतीय किसान यूनियन और सीजेपी आगे साथ में कोई बड़ा प्रदर्शन कर सकती है। सीजेपी के संस्थापक अभिजीत दीपके ने कहा कि अगर छात्रों का उत्पीड़न नहीं रुका और उनके खिलाफ दर्ज मामले वापस नहीं लिए गए, तो पार्टी जल्द ही फिर से सड़कों पर उतरेगी। उन्होंने कहा, 20 जुलाई को छात्रों ने पुलिस की लाठियां और खून-खराबा झेला। अगर सरकार इतने पर भी नहीं चेती और युवाओं का उत्पीड़न जारी रहा, तो हम बहुत जल्द दोबारा सड़कों पर उतरेंगे।

सांसदों की संख्या बढ़ाने के बजाय युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाए सरकार : उद्धव ठाकरे

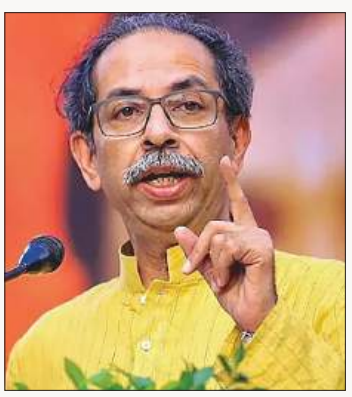

शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे ने प्रस्तावित परिसीमन विधेयक को लेकर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर निशाना साधते हुए कहा कि सरकार को सांसदों की संख्या बढ़ाने के बजाय युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाने पर ध्यान देना चाहिए। तीन पुस्तकों के विमोचन समारोह को संबोधित करते हुए उद्धव ने अयोध्या स्थित राम मंदिर में चढ़ावे की कथित चोरी का परोक्ष रूप से उल्लेख करते हुए आरोप लगाया कि भाजपा भगवान राम के साथ भी ''इस्तेमाल करो और छोड़ दो'' की नीति अपनाती है। जिन पुस्तकों का विमोचन किया गया, उनमें से एक उद्धव के दादा प्रबोधनकार ठाकरे और पिता बाल ठाकरे के लेखन पर आधारित है। इतिहास लोकसभा सदस्यों की संख्या बढ़ाने से जुड़े प्रस्तावित विधेयक के औचित्य पर सवाल उठाते हुए उद्धव ने आरोप लगाया कि इस विधेयक के समर्थन के लिए सांसदों को अपनी ओर किया जा रहा है। उद्धव का इशारा पिछले महीने शिवसेना (उबाठा) के छह लोकसभा सदस्यों के एकनाथ शिंदे नीत शिवसेना में शामिल होने के घटनाक्रम की ओर था। उद्धव ने कहा, ''सांसदों की संख्या बढ़ाने के बजाय रोजगार के अवसर बढ़ाइए।'' उन्होंने सवाल किया कि यदि मौजूदा 550 सांसदों को ही सदन में बोलने का पर्याप्त अवसर नहीं मिलता, तो 850 सांसदों को बोलने का समय कैसे मिलेगा।

अनुच्छेद 370 की बहाली और 'कश्मीर मुद्दे के समाधान' की मांग जारी रहेगी : महबूबा

नेंका के पूर्ण राज्य के दर्जे की मांग के बाद पीपल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने घोषणा की है कि उनकी पार्टी अनुच्छेद 370 की बहाली और 'कश्मीर मुद्दे के समाधान' की मांग को लेकर पांच अगस्त को पूरे जम्मू-कश्मीर में जिला मुख्यालयों पर शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन करेगी। हालांकि राज्य में सत्तारुढ़ नेशनल कांफ्रेंस ने अब अपना मुख्य जोर पूर्ण राज्य के दर्जे की वापसी पर लगा दिया है। इसी क्रम में संसद के मॉनसून सत्र की शुरुआत वाले दिन नेशनल कांफ्रेंस के नेताओं ने जम्मू-कश्मीर के पूर्ण राज्य के दर्जे की बहाली की मांग को लेकर दिल्ली में प्रदर्शन किया था। उस प्रदर्शन से विपक्षी पीडीपी ने दूरी बनाये रखी थी जिस पर मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने तीखे सवाल उठाये थे। अब पीपल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने घोषणा की है कि उनकी पार्टी अनुच्छेद 370 की बहाली और 'कश्मीर मुद्दे के समाधान' की मांग को लेकर पांच अगस्त को पूरे जम्मू-कश्मीर में जिला मुख्यालयों पर शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन करेगी। पूर्व मुख्यमंत्री ने यह घोषणा पीडीपी के 27वें स्थापना दिवस के मौके पर पार्टी मुख्यालय में आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन में की। उन्होंने कहा, ''यहां मौजूद हमारे सभी लोग पांच अगस्त को अपने-अपने जिलों में अनुच्छेद 370 और 35ए को बहाल करने और कश्मीर मुद्दे के शांतिपूर्ण समाधान के लिए शांतिपूर्ण विरोध-प्रदर्शन करेंगे।'' महबूबा मुफ्ती ने राष्ट्रीय राजधानी के जंतर-मंतर पर की गयी अपनी टिप्पणियों के लिए भी खेद जताया। महबूबा मुफ्ती ने कहा, ''अगर कश्मीर में प्रदर्शनकारियों के खिलाफ हिंसा पर मेरे द्वारा की गई टिप्पणी से कोई आहत हुआ है, तो मैं माफी मांगती हूं। हम आपको याद दिला दें कि पीडीपी अध्यक्ष ने 23 जुलाई को जंतर-मंतर का दौरा किया था और परीक्षा में कथित अनियमितताओं के खिलाफ 'कॉकरोच जनता पार्टी' के नेतृत्व में हो रहे विरोध प्रदर्शन को अपना समर्थन दिया था। दिल्ली में छात्र प्रदर्शनकारियों के खिलाफ पुलिस की कार्रवाई का विरोध करते हुए महबूबा मुफ्ती ने कहा था कि कश्मीर में हालात अलग हैं, क्योंकि वहां सुरक्षा बल उग्रवाद से लड़ रहे हैं।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

जिद... सच की

संगठित व संयमित रहकर ही मनवाई जा सकती है अपनी

एकबार फिर युवा शक्ति ने ये दिखा दिया कि वह संगठित रहकर अपनी बात किसी किसी सरकार से मनवा सकते हैं। दरअसल हम बात कर रहे नीट पेपर लीक मामले में छोत्रों की आंदोलन की जिसकी अगुवाई सीजेपी ने की। देखा जाए तो इस जीत का सबसे बड़ा श्रेय केवल आंदोलन की सफलता को नहीं बल्कि उसके संयम को भी जाता है। अनेक स्थानों पर तनाव और पुलिस कार्रवाई के बावजूद आंदोलन के नेतृत्व ने लगातार संवैधानिक और शांतिपूर्ण विरोध की अपील की। यही कारण है कि इस आंदोलन को व्यापक सामाजिक समर्थन मिला। लोकतंत्र में किसी भी जनआंदोलन की नैतिक शक्ति उसकी अहिंसा और अनुशासन से ही आती है। हालांकि इस जीत के साथ कुछ गंभीर प्रश्न भी खड़े होते हैं। भारतीय लोकतंत्र ने एक बार फिर यह साबित किया है कि जनता की आवाज यदि संगठित, शांतिपूर्ण और निरंतर हो तो वह सबसे शक्तिशाली सत्ता को भी आत्ममंथन के लिए विवश कर सकती है।

केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा केवल एक मंत्री का पद छोड़ना नहीं है बल्कि यह उस लोकतांत्रिक दबाव की स्वीकारोक्ति भी है, जो पिछले कई सप्ताह से देशभर के लाखों युवाओं ने अपने धैर्य, अनुशासन और दृढ़ता से निर्मित किया। हाल के घटनाक्रमों में सरकार और आंदोलनकारियों के बीच बातचीत के बाद आंदोलन समाप्त करने की घोषणा हुई और आंदोलन के नेतृत्व ने दावा किया कि उनकी प्रमुख मांगें स्वीकार कर ली गई। यह घटना केवल शिक्षा मंत्रालय तक सीमित नहीं रहेगी। आने वाले वर्षों में इसे उस मोड़ के रूप में याद किया जाएगा, जब भारत की जेन-जी ने यह संदेश दिया कि लोकतंत्र केवल चुनावों से नहीं चलता बल्कि जवाबदेही, पारदर्शिता और नागरिक भागीदारी से भी संचालित होता है। इस पूरे आंदोलन की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि इसकी शुरुआत किसी स्थापित राजनीतिक दल ने नहीं की। यह आंदोलन सोशल मीडिया की दुनिया से निकला, व्यंग्य से शुरू हुआ और देखते ही देखते करोड़ों युवाओं की सामूहिक चेतना का प्रतीक बन गया। जिस 'कॉकरोच' शब्द का प्रयोग कथित रूप से अपमान के लिए किया गया था, उसी शब्द को युवाओं ने अपने आत्मसम्मान और प्रतिरोध का प्रतीक बना दिया। यही लोकतंत्र की सबसे बड़ी खूबसूरती है कि वह अपमान को भी प्रतिरोध की शक्ति में बदल देता है। इस आंदोलन ने भारतीय राजनीति को एक नया पाठ पढ़ाया है।

लंबे समय तक यह माना जाता रहा कि सोशल मीडिया पर चलने वाले अभियान केवल कुछ दिनों की सनसनी होते हैं लेकिन इस बार 'डिजिटल अभियान' सड़क पर उतरा, शांतिपूर्ण जनआंदोलन में बदला और अंततः सत्ता को निर्णय लेने के लिए बाध्य कर गया। इससे स्पष्ट है कि भारत की नई पीढ़ी केवल 'लाइक' और 'शेयर' तक सीमित नहीं है; वह लोकतांत्रिक भागीदारी की नई भाषा लिख रही है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

हमारे पड़ोस में एक पृथ्वी जैसा ग्रह!

मुकुल व्यास

सौरमंडल के बाहर कई ग्रहों की पहचान हो चुकी है। इन ग्रहों में कुछ ग्रह पृथ्वी जैसे हो सकते हैं। इनमें पृथ्वी जैसा ग्रह एक हमारे बहुत करीब हो सकता है। खगोलविदों का कहना है कि जीजे 3378 नामक एक कम चमक वाले छोटे तारे (ड्वार्फ स्टार) का चक्कर काटने वाला एक ग्रह प्रारंभिक अनुमानों की तुलना में ज्यादा पृथ्वी जैसा हो सकता है। फ्रांसीसी खगोलविदों ने कनाडा-फ्रांस-हवाई टेलीस्कोप का उपयोग करके इस ग्रह की पहचान की थी। जीजे 3378बी नामक यह ग्रह एक 'सुपर-अर्थ' है। वैसे यह ग्रह हमारी पृथ्वी से बड़ा है, लेकिन इसकी बनावट हमारी पृथ्वी की तरह चट्टानी हो सकती है, जो ब्रह्मांड में जीवन को सहारा देने वाला एकमात्र ज्ञात ग्रह है। बाद में की गई कई जांचों से पता चला है कि जीजे 3378बी अपने तारे से बिल्कुल सही दूरी पर स्थित है। इसका मतलब यह हुआ कि इसकी सतह पर तरल पानी हो सकता है। ग्रह के रहने लायक होने की जांच-सूची में पानी पहली जरूरी चीज है।

पहले इस ग्रह का द्रव्यमान पृथ्वी से 5.3 गुना होने का अनुमान लगाया गया था जिसे घटाकर अब 2.3 गुना कर दिया गया है। इसका अर्थ यह है कि इस ग्रह के चट्टानी होने की संभावना बहुत ज्यादा है। सिर्फ 25 प्रकाश-वर्ष की दूरी पर होने के कारण यह आवास योग्यता की विस्तृत जांच के लिए एक आकर्षक उम्मीदवार है। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया के खगोलविद पॉल रॉबर्टसन का कहना है कि यह '10-पारसेक सौर पड़ोस' में सबसे ज्यादा पृथ्वी जैसे संभावित बाहरी ग्रहों में से एक है। 10-पारसेक सौर पड़ोस अंतरिक्ष का एक गोलाकार आयतन है जो सूर्य से हर दिशा में 10 पारसेक (लगभग 32.6 प्रकाश वर्ष या 308.6 ट्रिलियन किलोमीटर) तक फैला हुआ है। रॉबर्टसन ने कहा कि यह हमारे सबसे करीबी ब्रह्मांडीय पड़ोसियों में से एक है। पच्चीस प्रकाश-वर्ष सुनने में तो बहुत दूर लगता है, लेकिन मिल्की वे आकाशगंगा लगभग 100,000 प्रकाश-वर्ष चौड़ी है, इसलिए उस लिहाज से यह हमारा पड़ोसी ही है।

ब्रह्मांड के सबसे बड़े सवालों में से एक यह है कि क्या जीवन को सहारा देने की क्षमता के मामले में पृथ्वी अकेली है। वैज्ञानिक अभी भी उन विशेषताओं का पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं जो किसी ग्रह को रहने लायक बना सकती हैं। मसलन वह किस तरह के तारे के चक्कर लगाता है। जिस ग्रह-प्रणाली में वह स्थित है, उसकी बनावट कैसी है, और क्या वहां टेक्टोनिक प्लेटें

या वायुमंडल है या नहीं। इनमें से कुछ विशेषताओं का पता लगाना दूसरों की तुलना में ज्यादा मुश्किल होगा। लेकिन वैज्ञानिक सबसे पहले जिस चीज को चुनते हैं, वह है कक्षा की वह सीमा जिसे हम हैबिटेबल जोन (रहने लायक क्षेत्र) कहते हैं। यह बाहरी ग्रह और उसके मेजबान तारे के बीच की दूरी है, जो यह पता लगाने के लिए जरूरी है कि क्या उस बाहरी ग्रह की सतह पर तरल पानी हो सकता है। बहुत पास होने पर यह भाप बन जाता है और बहुत दूर होने पर यह जम जाता है। रॉबर्टसन कहते हैं, हमारा मंत्र है 'पानी का पीछा करो'। यह वह चीज है जिसकी पृथ्वी पर हर ज्ञात जीवित चीज को जरूरत होती है। इसलिए जब हम ऐसे माहौल की तलाश करते हैं जहां जीवन पनप सके, तो सबसे पहले हम इसी चीज को देखते हैं। अगला सवाल अक्सर बनावट का होता है। हम जानते हैं कि चट्टानी ग्रहों पर जीवन हो सकता है, क्योंकि हम खुद ऐसे ही ग्रह पर रह रहे हैं। दूसरी तरह के ग्रहों पर भी जीवन हो सकता है, लेकिन अभी हमें इसके बारे में जानकारी नहीं है। इसलिए, अगर हम संभावित ग्रहों की सूची छोटी करें, तो चट्टानी ग्रह उसमें शामिल होंगे, जबकि बाकी 'शायद' वाली श्रेणी में चले जाएंगे। जीजे 3378बी ने ग्रह वैज्ञानिकों का ध्यान उस समय खींचा जब शुरुआती विश्लेषण से यह पता चला कि इसका परिक्रमा का समय 24.73 दिन है, जिससे यह अपने तारे के रहने लायक क्षेत्र में आ गया। हालांकि, यह समय पृथ्वी के साल से काफी कम है, लेकिन बौने तारे सूरज की तुलना में बहुत ठंडे और कम चमकदार होते हैं, इसलिए रहने लायक क्षेत्र तारे के बहुत ज्यादा करीब होता है। यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सस के खगोलशास्त्री माइकल एंडल ने कहा, सबसे जरूरी चीज है सटीकता।

कम द्रव्यमान वाले ग्रहों को खोजने के लिए हम हमेशा बहुत छोटे संकेतों की तलाश में रहते हैं। अगर हमारे उपकरण सटीक नहीं हैं, तो आप उन्हें नहीं ढूंढ पाएंगे। सटीक माप की वजह से शोधकर्ता जीजे 3378बी के द्रव्यमान और कक्षा के बारे में ज्यादा सटीक जानकारी हासिल कर पाए। पता चला है कि इसकी कक्षा तारे के ज्यादा करीब है। इसका समय 21.45 दिन है। यह अभी भी रहने लायक क्षेत्र के अंदर ही है। रॉबर्टसन कहते हैं, इस सुपर-अर्थ को अपने मेजबान तारे से उतना ही रेडिएशन मिलता है जितना पृथ्वी को अपने सूरज से मिलता है, इसलिए यह बिल्कुल सही जगह पर है।

परिवार परम्परा एवं बिखरते रिश्ते पर सुप्रीम कोर्ट की चिंता

ललित गर्ग

परिवार केवल एक छत के नीचे रहने वाले लोगों का समूह नहीं, बल्कि विश्वास, त्याग, धैर्य और संस्कारों का जीवंत विद्यालय है। जब इस विद्यालय की नींव कमजोर होने लगती है तो उसका प्रभाव केवल एक घर तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पूरा समाज उसकी कीमत चुकाता है। देश के बहुचर्चित सोनम रघुवंशी 'हनीमून मर्डर' प्रकरण की सुनवाई के दौरान सर्वोच्च न्यायालय की पीठ द्वारा व्यक्त की गई चिंता केवल एक अपराध पर की गई टिप्पणी नहीं थी, बल्कि भारतीय समाज के बदलते चरित्र का गहन सामाजिक विश्लेषण थी। न्यायमूर्ति एम. एम. सुंदरेश और न्यायमूर्ति पी. बी. वराले ने जिस पीड़ा के साथ कहा कि संयुक्त परिवार लोगों को धैर्य, संयम, सहनशीलता और समायोजन सिखाते थे, वहीं आज एकल परिवारों में अवसाद, असहिष्णुता और संबंधों का विघटन बढ़ रहा है, वह हमारे समय का कटु सत्य है।

माता-पिता और संतान, भाई-बहन, दादा-दादी और पोते-पोतियों के बीच भी भावनात्मक दूरी लगातार बढ़ रही है, यह परिवार परम्परा एवं रिश्तों में बढ़ती दूरी अब पति-पत्नी के बीच भी बड़ी दरारें डालने लगी है। रिश्तों का खोखलापन इतना बढ़ गया है कि अपनी ही पत्नी या पति की हत्या करने में भी तनिक संकोच नहीं रहा। ऐसे घटनाएं बार-बार देखने को मिल रही है। घर बड़े हो गए हैं, लेकिन दिल छोटे होते जा रहे हैं। सुविधाएं बढ़ी हैं, परंतु संवेदनाएं सिकुड़ती जा रही हैं। संवाद कम हो गए हैं और स्क्रीन का समय बढ़ गया है। परिणामस्वरूप रिश्ते धीरे-धीरे औपचारिकता में बदलते जा रहे हैं। हाल के वर्षों में विवाह से पहले अथवा विवाह के कुछ ही दिनों बाद हुई इन नृशंस हत्याओं ने पूरे देश को झकझोर दिया है। यह केवल कानून-व्यवस्था का प्रश्न नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना के पतन का संकेत है। जिन परिवारों में धन, प्रतिष्ठा और भौतिक सुख-सुविधाओं की कोई कमी नहीं थी, वहीं जीवन का सबसे बड़ा अभाव विश्वास और संतोष का था। संत कबीर का यह वचन आज पहले से अधिक प्रासंगिक प्रतीत होता है- 'जब आए संतोष धन, सब धन धूरि समान।'

भौतिक संपन्नता कभी भी मानसिक शांति और रिश्तों की ऊष्मा नहीं खरीद सकती। भारतीय संस्कृति ने परिवार को केवल सामाजिक संस्था नहीं माना, बल्कि धर्म, संस्कृति और जीवन-मूल्यों का प्रथम विद्यालय माना है। संयुक्त परिवार में दादा-दादी केवल बुजुर्ग नहीं होते थे, वे अनुभवों के विश्वविद्यालय होते थे। नाना-नानी केवल रिश्तेदार नहीं, बल्कि संस्कारों के संरक्षक होते थे। बच्चों को कहानियों के माध्यम से धैर्य, करुणा, क्षमा, संयम और त्याग का पाठ पढ़ाया जाता था। घर का हर सदस्य दूसरे के दुःख का सहभागी होता था। इसलिए किसी एक व्यक्ति का तनाव पूरे परिवार की शक्ति से हल्का हो जाता था। आज यह सुरक्षा-कवच तेजी से टूट रहा है। महत्वाकांक्षाओं की अंधी दौड़ में पति-पत्नी दोनों कार्यस्थल पर व्यस्त हैं। बच्चों का बचपन मोबाइल, टैबलेट और घरेलू सहायिकाओं के भरोसे बीत रहा है। जब बच्चा रोता है तो उसे गोद नहीं, मोबाइल दिया जाता है। यह सुविधा का समाधान नहीं, संवेदनाओं का विस्थापन है। सुप्रीम कोर्ट की यह टिप्पणी कि 'भावनाओं का विकल्प गैजेट्स नहीं हो सकते', हमारे समय की सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक चेतावनी है। डिजिटल क्रांति ने जीवन को सरल अवश्य बनाया है, लेकिन यदि तकनीक मनुष्य पर हावी हो जाए शत्रु बन जाती है।

आज परिवार एक ही कमरे में बैठकर भी अलग-अलग दुनिया में खोया रहता है। भोजन की मेज पर संवाद समाप्त हो गया है। आंखों में आंखें डालकर बातें करने की परंपरा लुप्त होती जा रही है। इससे भावनात्मक जुड़ाव कमजोर पड़ रहा है और अकेलापन बढ़ रहा है। इस पूरे संकट की जड़ केवल आधुनिकता नहीं है। समस्या आधुनिकता के असंतुलित और अंधानुकरण में है। पश्चिम से हमने तकनीक तो अपनाई, लेकिन उसकी सामाजिक चुनौतियों से सीख नहीं ली। अब पति और पत्नी के बीच तीसरा आना आम बात हो गयी है, और यही तीसरा समस्या की जड़ है। इस तरह के अवैध रिश्तों ने त्रासद घटनाओं को जन्म दिया है। भारतीय परिवार व्यवस्था की सबसे बड़ी विशेषता थी-'मैं' से पहले 'हम' का भाव। आज 'हम' की जगह 'मैं' ने ले ली है। अधिकारों की चर्चा तो बहुत होती है, लेकिन कर्तव्यों का स्मरण बहुत कम होता है। रिश्तों में बढ़ता अहंकार भी विघटन का बड़ा कारण है।

पति-पत्नी दोनों अपने-अपने तर्कों को अंतिम सत्य मानने लगे हैं। कोई झुकना नहीं चाहता। जबकि भारतीय परंपरा ने सिखाया था कि झुकना हार नहीं, बल्कि संबंधों को बचाने की सबसे बड़ी जीत है। क्षमा और संवाद हर टूटते रिश्ते की पहली दवा हैं, किंतु आज संवाद की जगह आरोप और क्षमा की जगह प्रतिशोध ने ले ली है। यह भी विचारणीय है कि आज विवाह को जीवनभर का संस्कार नहीं, बल्कि सुविधानुसार निभाया जाने वाला अनुबंध समझा जाने लगा है। यही कारण है कि छोटी-छोटी असहमतियां भी अदालतों तक पहुंच रही हैं। न्यायालय न्याय दे सकता है, लेकिन प्रेम नहीं लौटा सकता। कानून अधिकारों का संरक्षण कर सकता है, लेकिन आत्मीयता का निर्माण नहीं कर सकता। इसलिए पारिवारिक समस्याओं का स्थायी समाधान न्यायालयों में नहीं, परिवारों के भीतर ही खोजा जाना चाहिए। भारत आज विश्वगुरु बनने का स्वप्न देख रहा है। आर्थिक प्रगति, वैज्ञानिक उपलब्धियां, डिजिटल नवाचार और वैश्विक नेतृत्व निश्चित रूप से गर्व के विषय हैं।

इतिहास

सबसे पहले मित्रता दिवस साल 1935 में मनाया गया था। इस दिन को अमेरिका में अगस्त के महीने में मनाया गया। दोस्ती के प्रतीक के तौर पर फ्रेंडशिप डे मनाने की शुरुआत हुई, जिसके बाद हर साल मित्रता दिवस के रूप में इस दिन को दुनियाभर में मनाया जाने लगा। फ्रेंडशिप डे को मनाने की दिलचस्प कहानी है। अमेरिका में 1935 में अगस्त के पहले रविवार के दिन एक व्यक्ति की हत्या कर दी गई थी। कहा जाता है कि इस हत्या के पीछे अमेरिकी सरकार थी। जिस व्यक्ति की मौत हुई थी, उसका एक प्रिय मित्र था। जब दोस्त की मौत की सूचना मिली तो वह बहुत हताश हो गया। दोस्त के जाने के गम में उस शख्स ने भी आत्महत्या कर ली।

फ्रेंडशिप डे

दोस्ती विश्वास और खुशहाली का दूसरा नाम है

हर साल अगस्त महीने के पहले रविवार को फ्रेंडशिप डे यानी मित्रता दिवस मनाया जाता है। भारत समेत कई देशों में लोग दोस्ती के इस खास दिन को धूमधाम से मनाते हैं। नाम से ही स्पष्ट है फ्रेंडशिप डे यानी ऐसा दिन जो दोस्ती के नाम समर्पित है। मदर्स डे या फादर्स डे की तरह ही फ्रेंडशिप डे को मनाने की परंपरा सालों पहले शुरू हुई। दो दोस्तों की दोस्ती को पूरी दुनिया ने सलाम किया और इस दिन को उन दोनों की दोस्ती के नाम समर्पित कर दिया। इस दिन लोग अपने दोस्तों के साथ पार्टी करते हैं, घूमते फिरते हैं और अपनी दोस्ती को सेलिब्रेट करते हैं। हर साल की तरह इस साल भी अगस्त के पहले रविवार यानी दो अगस्त को फ्रेंडशिप मनाया जायेगा।

अगस्त के पहले रविवार को ही क्यों मनाते हैं

दोस्ती और लगाव के इस रूप को देख कर अमेरिकी सरकार ने अगस्त के पहले रविवार को फ्रेंडशिप डे के तौर पर मनाने का फैसला लिया। धीरे धीरे ये दिन प्रचलन में आ गया और भारत समेत अन्य कई देशों में अगस्त के पहले रविवार को मित्रता दिवस के तौर पर मनाया जाने लगा। कुछ लोगों को फ्रेंडशिप डे को लेकर कंफ्यूजन है कि 30 जुलाई और अगस्त के पहले रविवार में से सही फ्रेंडशिप डे कौन सा होता है। दरअसल, साल 1930 में जॉयस हॉल ने हॉलमार्क कार्ड के रूप में उत्पन्न किया था। बाद में 30 जुलाई 1958 को आधिकारिक तौर पर अंतर्राष्ट्रीय मित्रता दिवस मनाने की घोषणा की गई। लेकिन भारत समेत बांग्लादेश, मलेशिया, संयुक्त अरब अमीरात और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे देश अगस्त के पहले रविवार को ही दोस्ती दिवस मनाते हैं।

फ्रेंडशिप डे का महत्व

हर व्यक्ति की जीवन में कोई न कोई दोस्त जरूर होता है। दोस्ती की न तो उम्र होती है और न ही लिंग व राष्ट्रभेद। दोस्ती की भावना विश्वास, एकजुटता और खुशहाली को प्रोत्साहित करती है। ऐसे में दोस्ती का महत्व जितना जरूरी है, उतना ही इस महत्व को हर दोस्त को महसूस कराना। इसलिए हर साल दोस्ती दिवस मनाया जाता है।

हंसना मना है

मैडम- क्लास में जो बेवकूफ हो वो खड़ा हो जाए। पप्पू मसूमियत से खड़ा हो गया मैडम- क्या तुम बेवकूफ हो? पप्पू- नहीं मैडम आप अकेली खड़ी थीं इसलिए मुझे अच्छा नहीं लगा...

भिखारी- पहले आप 10-10 रुपए देते थे, अब सिर्फ 1 रुपए का सिक्का? रमेश - बाबा पहले मैं कुंवारा था अब शादीशुदा हूं, भिखारी- श्रम नहीं आती मेरे पैसो से अपने बीवी- बच्चों को पाल रहा है....

जीजा अपनी साली के साथ चैटिंग करते हुए जीजा - वाह तुम तो अपनी बहन से भी ज्यादा खुबसूरत हो... साली - जीजू आप बड़े वो हो। जीजा- अच्छा ये तो बताओ तुम इतनी खुबसूरत कैसे हो? आखिर क्या इस्तेमाल करती हो? साली - फोटोशॉप और कैमरा फ़िल्टर, जीजा बेहोश...

पत्नी- शादी से पहले तुम मुझे होटल, सिनेमा, और न जाने कहां- कहां घुमाते थे, शादी हुई तो घर के बाहर भी नहीं ले जाते.. पति- क्या तुमने कभी किसी को.. चुनाव के बाद प्रचार करते देखा है।

दो लड़कियां बस में सीट के लिएज्लड़ रही थीं, कंडक्टर- अरे क्यों लड़ रही हो, जो उम्र में सबसे बड़ी है वो बैठ जाए फिर क्या, पुरे रस्ते दोनों खड़ी ही रही.....

कहानी | मुर्गी पहले आई या अंडा?

एक बार बादशाह अकबर की राजसभा में एक ज्ञानी पंडित आया हुआ था। वह कुछ सवालों के जवाब बादशाह से जानना चाहता था, लेकिन बादशाह के लिए उसके सवालों का जवाब देना मुश्किल हो गया। इसलिए, उन्होंने पंडित के सवालों के जवाब देने के लिए बीरबल को आगे कर दिया। बीरबल की चतुराई से सभी वाकिफ थे और सभी को उम्मीद थी कि बीरबल पंडित के हर सवाल का जवाब आसानी से दे सकते हैं। पंडित ने बीरबल से कहा, मैं तुम्हें दो विकल्प देता हूं। एक या तो तुम मुझे मेरे 100 आसान से सवाल के जवाब दो या फिर मेरे एक मुश्किल सवाल का जवाब दो। बीरबल ने सोच-विचार करने के बाद कहा कि मैं आपके एक मुश्किल सवाल का जवाब देना चाहता हूं। फिर पंडित ने बीरबल से पूछा, तो बताओ मुर्गी पहले आई या अंडा। बीरबल ने तुरंत पंडित को जवाब दिया कि मुर्गी पहले आई। फिर पंडित ने उनसे पूछा कि तुम इतनी आसानी से कैसे बोल सकते हो कि मुर्गी पहले आई। इस पर बीरबल ने पंडित से कहा कि यह आपका दूसरा सवाल है और मुझे आपके एक सवाल का ही जवाब देना था। ऐसे में पंडित बीरबल के सामने कुछ बोल नहीं पाया और बिना बोले ही दरबार से चला गया। बीरबल की चतुराई और अक्लमंदी को देखकर अकबर हमेशा की तरह ही इस बार भी बहुत खुश हुए। इससे बीरबल ने साबित कर दिया कि बादशाह अकबर के दरबार में सलाहकार के रूप में बीरबल का रहना कितना जरूरी है।

कहानी से सीख: सही तरह से दिमाग लगाने और संयम रखने से हर सवाल का जवाब और हर समस्या का हल मिल सकता है।

7 अंतर खोजें

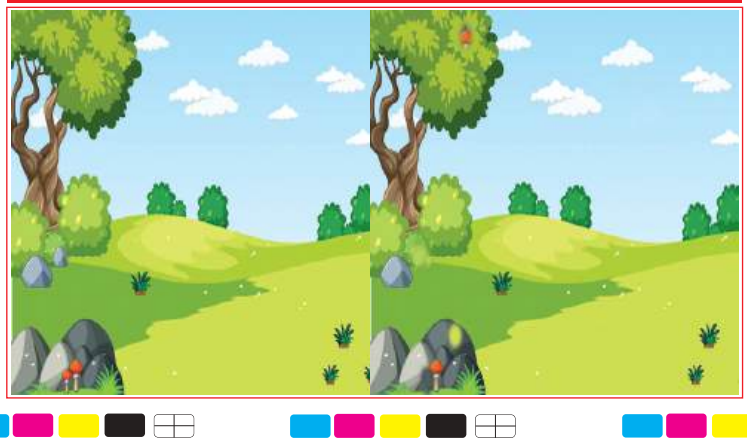

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

आज यात्रा लाभदायक रहेगी। भेंट व उपहार की प्राप्ति होगी। कोई बड़ी समस्या का हल सहज ही होगा। समय अनुकूल है। स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा।

वृषभ

परिवार के किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य पर खर्च होगा। व्यवसाय ठीक चलेगा। आय में निश्चितता रहेगी। चिंता तथा तनाव रहेंगे। जल्दबाजी न करें। विवाद को बढ़ावा न दें।

मिथुन

आय में वृद्धि होगी। लाभ में वृद्धि होगी। कारोबार में वृद्धि होगी। शेयर मार्केट से लाभ होगा। व्यापार ठीक चलेगा। नौकरी में प्रभाव बढ़ेगा। समय की अनुकूलता का लाभ लें।

कर्क

आर्थिक उन्नति की योजना बनेगी। व्यापार लाभदायक रहेगा। कार्यस्थल पर परिवर्तन हो सकता है। नए उपक्रम प्रारंभ हो सकते हैं। कार्यसिद्धि होगी। प्रसन्नता में वृद्धि होगी।

सिंह

नौकरी में प्रभाव बढ़ेगा। पार्टनरों का सहयोग मिलेगा। दुष्टजनों से सावधान रहें। प्रमाद न करें। धार्मिक अनुष्ठान में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा।

कन्या

बनते कामों में विघ्न आ सकते हैं। चिंता तथा तनाव रहेंगे। बेकार बातों की तरफ ध्यान न दें। व्यवसाय ठीक चलेगा। आय होगी। फालतू खर्च होगा। विवाद को बढ़ावा न दें।

तुला

प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। व्यापार लाभदायक रहेगा। जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे। भाइयों का सहयोग प्राप्त होगा। मानसिक बेचैनी रहेगी। जोखिम न लें।

वृश्चिक

स्थायी संपत्ति के कार्य बड़ा लाभ दे सकते हैं। उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। बेरोजगारी दूर करने के प्रयास सफल रहेंगे। समय की अनुकूलता का लाभ लें।

धनु

रचनात्मक कार्य सफल रहेंगे। पार्टी व पिकनिक का आनंद प्राप्त होगा। मित्रों के साथ समय मनोरंजक व्यतीत होगा। प्रसन्नता में वृद्धि होगी। नौकरी में प्रभाव बढ़ेगा।

मकर

मेहनत अधिक होगी। लाभ के अवसर टलेंगे। मानसिक बेचैनी रहेगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। लाभ होगा। कोई बड़ी बाधा उठ खड़ी हो सकती है। मान-सम्मान मिलेगा।

कुम्भ

व्यापार लाभदायक रहेगा। निवेश शुभ रहेगा। ऐश्वर्य के साधनों पर खर्च होगा। घर-बाहर सुख-शांति रहेगी। भाग्य का साथ रहेगा। प्रमाद न करें।

मीन

उत्साहवर्धक सूचना मिलेगी। आत्मसम्मान बना रहेगा। बुद्धि का प्रयोग करेंग। कार्य में सफलता मिलेगी। पार्टनरों का सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी में प्रभाव बढ़ेगा।

फिल्म बंटवारा 1947 में कनिका कपूर को देख फैंस हुए कंफ्यूज्ड

बॉलीवुड | गपशप

फिल्म बंटवारा 1947 का ट्रेलर 28 जुलाई 2026 को रिलीज किया गया था। यह फिल्म 14 अगस्त 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। सनी देओल की मूवी ने पहले ही काफी ज्यादा बज क्रिएट कर रखा है। लेकिन फिलहाल मूवी किसी अन्य वजह से चर्चा में है। इसकी एक वजह ये है कि फिल्म की नया पोस्टर हाल ही में रिलीज हुआ है जिसमें करण देओल के साथ कनिका कपूर नजर आ रही हैं। लेकिन फैंस इसे देखकर काफी ज्यादा कंफ्यूज्ड हैं और उन्हें पहली नजर में वो कियारा आडवाणी की तरह लगीं।

इंस्टाग्राम पर अपने किरदार का पोस्टर शेयर करते हुए कनिका ने लिखा, बंटवारे के दिन, 14 अगस्त को सिनेमाघरों में #Batwara1947 देखें। कई लोगों को कनिका पहली नजर में देखने पर कियारा जैसी लगीं और उनका सवाल है कि क्या कियारा आडवाणी बंटवारा 1947 में काम कर रही हैं? एक यूजर ने कमेंट किया- कनिका बिल्कुल कियारा जैसी क्यों दिख रही हैं। दूसरे ने कमेंट किया- अरे! मुझे पहली नजर में लगा कि कियारा आडवाणी है। दिलचस्प बात यह है कि इंस्टाग्राम पर कनिका की दूसरी तस्वीरों को देखने पर पता चलता है कि आम तस्वीरों में वह कियारा जैसी नहीं दिखतीं। इससे कई फैंस को लगता है कि ऐसा मुख्य रूप से स्टाइलिंग या पोस्टर डिजाइन की वजह से है।

दिल्ली की रहने वाली कनिका, बंटवारा 1947 से बॉलीवुड में डेब्यू करने वाली हैं। फिल्मों में आने से पहले, वह टीवी सीरियल एक दूजे के वास्ते 2 में सुमन तिवारी का किरदार निभाने के लिए जानी जाती थीं। वह दोनों, मॉडर्न परिवार और मर्डरबाद जैसी वेब सीरीज में भी नजर आ चुकी हैं।

मेरे पास हारर फिल्में करने का निर्देशक है : कोंकणा सेन शर्मा

कोंकणा सेन शर्मा को हॉरर फिल्में बहुत पसंद हैं, लेकिन वह उन फिल्मों को देखने से डरती भी हैं। एक थी डायन हॉरर फिल्म में अभिनय कर चुकी कोंकणा ने बताया कि उनके भीतर हॉरर फिल्मों का निर्देशन करने वाला निर्देशक भी है।

वह एक हॉरर फिल्म की कहानी पर काम भी कर रही हैं। अपनी निर्देशित पहली फिल्म ए डेथ इन द गंज के एक डरावने सीन पर बात करते हुए कोंकणा ने कहा कि फिल्म के एक डरावने रात वाले सीन को लिखते समय कई बार शीशे में खुद की ही परछाई देखकर मैं डर जाती थी। हॉरर जानर मुझे दिलचस्प लगता है, लेकिन जब मैं हॉरर जॉनर में कुछ लिखती हूं, तब खुद भी डर जाती हूं। इस कारण मैं कई बेहतरीन हॉरर फिल्में भी नहीं देख पाती हूं, क्योंकि उनका असर मेरे मन में बहुत लंबे समय तक रह जाता है।

मैं एक हॉरर फिल्म भी बनाना चाहती हूं। मातृत्व पर आधारित उस कहानी के बारे में मैं काफी समय से बात कर रही हूं, लेकिन अभी तक उसे लिखा नहीं है। साइकोलॉजिकल हॉरर कहानियों में मेरी गहरी दिलचस्पी है। आगे कोंकणा ने बताया कि वह अपनी इस कहानी के सारे क्रिएटिव राइट्स खुद के पास रखना चाहती हैं।

इसलिए उन्होंने इस कहानी के लिए फिलहाल किसी स्टूडियो या निर्माता से बात नहीं की है। वह कहती हैं कि मैं किसी निर्माता से पैसे लेकर स्क्रिप्ट नहीं लिखना चाहती, क्योंकि ऐसा करने पर वह कहानी उनकी हो जाती है। कहानी मेरे दिमाग में है, अगर मैं थोड़ी कम बिजी हुई तो इसे खुद लिखूंगी।

कोंकणा पिछली बार प्राइम वीडियो की थ्रिलर सीरीज सर्च : द नैना मर्डर केस में नजर आई थीं जिसमें उन्होंने एक पुलिस ऑफिसर का किरदार निभाया था। वहीं वे अनुराग बसु की फिल्म मेट्रो इन दिनों का भी हिस्सा थी। फिलहाल वे एक और रोमांटिक कॉमेडी सीरीज का निर्देशन कर रही हैं जिसमें अदिती राव हैदरी और बरुण सोबती नजर आएंगे।

बॉलीवुड | मन की बात

जो मेरे प्रशंसक हैं, उनका मेरे प्रति सुरक्षात्मक रवैया है : शहनाज गिल

रियलिटी शो बिग बॉस 13 से लोकप्रियता पाने वालीं अभिनेत्री शहनाज गिल इन दिनों पंजाबी फिल्मों में सक्रिय हैं। वह सलमान खान अभिनीत फिल्म किसी का भाई किसी की जान और थैंक यू फॉर कमिंग जैसी हिंदी फिल्में भी कर चुकी हैं। हालिया रिलीज पंजाबी फिल्म इश्कनामा में नजर आई शहनाज प्यार को कमजोरी नहीं इंसान की ताकत मानती हैं। उनका कहना है, प्यार तो इंसान की ताकत ही होती है, प्यार को कभी कमजोरी मानना या बनाना भी नहीं चाहिए। प्यार को अपनी ताकत बनाकर और हमेशा अपने साथ रखना चाहिए। शहनाज गिल धीरे-धीरे फिल्मों में अपनी अलग पहचान बनाने में जुटी हैं। उनका कहना है कि अभी उन्होंने अपने अभिनय सफर की शुरुआत ही की है और हर नई फिल्म उनके लिए सीखने और खुद को साबित करनेका नया अवसर लेकर आती है। मुझे लगता है कि मैं अभी इंडस्ट्री में एक फ्रेश (नया) चेहरा हूं, अभी मुझे लोगों ने सिनेमा में इतना ज्यादा देखा नहीं है। मैंने अभी फिल्में करना शुरू ही किया है, अभी तो बहुत कुछ करना है। तो आगे मैं जो भी काम करूंगी, सबमें मेरे लिए कुछ न कुछ नया अनुभव ही होगा। मैं जो भी भूमिकाएं निभाउंगी, वो सब मेरे लिए नए ही होंगे। इंटरनेट मीडिया पर शहनाज के बड़ी संख्या में प्रशंसक हैं। काम के चुनाव में उनके प्रभाव को लेकर शहनाज कहती हैं, मेरे जो भी प्रशंसक हैं, मेरे प्रति उन सभी का बहुत ही ज्यादा सुरक्षात्मक रवैया है। वह मुझे ज्यादा से ज्यादा देखना चाहते हैं। वो तो मेरी मेकअप आर्टिस्ट से लेकर हेयर स्टाइलिस्ट तक को मैसेज करते हैं कि आज शहनाज के हेयर या मेकअप ऐसा क्यों बनाया है? ये क्यों नहीं किया है? वो भी बेचारे सारा दिन लोगों के मैसेज पढ़-पढ़कर थक जाते हैं। शहनाज ने आगे कहा, मुझे इस इंडस्ट्री में काम करते हुए काफी समय हो गया है, मुझ पर ऊपरवाले का आशीर्वाद है कि मुझे अभी तक इतना प्यार मिल रहा है। बिग बॉस की देन है कि मैं इस इंडस्ट्री में इतने लंबे समय तक टिक पाई हूं। जैसा प्यार मुझे बिग बॉस से मिला है, मैं उम्मीद करती हूं कि मुझे सिनेमा से भी वैसा ही प्यार मिले।

ये है दुनिया का सबसे जहरीला पेड़, छांव में खड़ा रहना भी खतरनाक, स्वादिष्ट सेब जैसे फल फंसा लेते हैं शिकार!

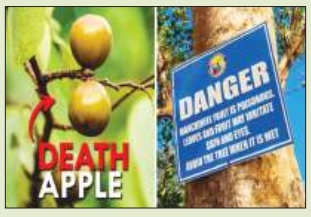

प्रकृति को जीवन का आधार माना जाता है। पेड़-पौधे हमें ऑक्सीजन, फल, छाया और स्वच्छ वातावरण प्रदान करते हैं। आमतौर पर पेड़ों को जीवनदायी माना जाता है, लेकिन दुनिया में कुछ ऐसे पेड़ भी मौजूद हैं जो इंसानों के लिए बेहद खतरनाक साबित हो सकते हैं। ऐसा ही एक पेड़ है Manchineel Tree, जिसे दुनिया के सबसे जहरीले पेड़ों में गिना जाता है। इसका फल देखने में बिल्कुल छोटे सेब जैसा लगता है, लेकिन इसी कारण इसे डेथ एप्पल भी कहा जाता है। यह पेड़ मुख्य रूप से कैरेबियाई द्वीपों, फ्लोरिडा के कुछ तटीय क्षेत्रों, मध्य अमेरिका और उत्तरी दक्षिण अमेरिका के कुछ हिस्सों में पाया जाता है। अपनी जहरीली प्रकृति के कारण यह लंबे समय से वैज्ञानिकों और पर्यटकों दोनों के लिए आकर्षण और सावधानी का विषय बना हुआ है। इस पेड़ की सबसे खतरनाक बात केवल इसका फल नहीं, बल्कि इसका दूधिया रस भी है। विशेषज्ञों के अनुसार, इस रस में ऐसे विषैले रसायन होते हैं जो त्वचा के संपर्क में आने पर तेज जलन, लालिमा और फफोले पैदा कर सकते हैं। यदि यह रस आंखों में चला जाए तो गंभीर तकलीफ हो सकती है। यही कारण है कि इस पेड़ को छूने से भी बचने की सलाह दी जाती है। इतना ही नहीं, बारिश के दौरान भी सावधानी बरतने की जरूरत होती है। यदि बारिश का पानी इस पेड़ की पत्तियों और शाखाओं से होकर नीचे टपकता है, तो उसमें मौजूद विषैले तत्व त्वचा के संपर्क में आ सकते हैं। इसी वजह से विशेषज्ञ इस पेड़ के नीचे बारिश से बचने के लिए खड़े होने की सलाह नहीं देते। हालांकि सामान्य रूप से केवल इसकी छाया में खड़े होने से नुकसान होने का दावा वैज्ञानिक रूप से स्थापित नहीं है; जोखिम मुख्यत: इसके विषैले रस के संपर्क से जुड़ा होता है। इस पेड़ का फल आकार और रंग में छोटे हरे सेब जैसा दिखाई देता है। देखने में यह काफी आकर्षक लगता है, लेकिन इसे खाना बेहद खतरनाक हो सकता है। इसी कारण इसे डेथ एप्पल कहा जाता है। ऐतिहासिक विवरणों में उल्लेख मिलता है कि इस फल का सेवन करने से गंभीर जलन, उल्टी, पेट दर्द और अन्य गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। दुनिया के कई पर्यटन स्थलों पर जहां यह पेड़ पाया जाता है, वहां इसके पास चेतावनी बोर्ड लगाए जाते हैं। इन बोर्डों पर साफ लिखा होता है कि पेड़ को ना छुएं, इसके फल ना तोड़ें और ना ही उनका सेवन करें। कुछ स्थानों पर पेड़ के तने पर लाल रंग का निशान भी बनाया जाता है ताकि पर्यटक इसे आसानी से पहचान सकें।

अजब-गजब | यह है भारत का अनोखा गांव

यहां हर घर के बाहर खड़ी रहती है लैंड रोवर कार

आज के समय में लैंड रोवर का नाम सुनते ही लोगों के दिमाग में लग्जरी, रॉयल लाइफस्टाइल और करोड़ों की कीमत वाली एसयूवी की तस्वीर उभर आती है। यह दुनिया की सबसे प्रीमियम कार कंपनियों में गिनी जाती है और इसकी गाड़ियों में सफर करना हर किसी का सपना होता है। बड़े उद्योगपति, फिल्मी सितारे और अमीर लोग इसे अपने स्टेटस सिंबल के तौर पर रखते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि भारत में एक ऐसा गांव भी है, जहां यही लग्जरी कारें किसी शौक के लिए नहीं, बल्कि रोजमर्रा की टैक्सी के रूप में इस्तेमाल की जाती हैं? यहां दशकों पुरानी लैंड रोवर आज भी पहाड़ी रास्तों पर उसी मजबूती के साथ दौड़ती हैं, जैसे समय इनके लिए थम गया हो।

यह गांव पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले में भारत-नेपाल सीमा के पास स्थित है। दार्जिलिंग शहर से इसकी दूरी करीब 28 किलोमीटर है। पहाड़ों के बीच बसा यह छोटा-सा गांव अपनी खूबसूरत वादियों के साथ-साथ एक खास वजह से पूरी दुनिया में मशहूर है। लोग इसे लैंड रोवरों का गांव भी कहते हैं।

यहां पहुंचने वाले टूरिस्ट सबसे पहले गांव की सड़कों पर दौड़ती पुरानी लैंड रोवर गाड़ियों को देखकर हैरान रह जाते हैं। कई गाड़ियां 60 से 70 साल पुरानी हैं, लेकिन आज भी बिना किसी परेशानी के ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर आसानी से दौड़ती हैं।

मानेभंजन में लैंड रोवर का इतिहास 1960 के दशक से जुड़ा माना जाता है। उस समय ब्रिटिश चाय बागानों के मालिकों और अधिकारियों को पहाड़ी इलाकों में सफर करना पड़ता था। यहां की सड़कें बेहद संकरी, पथरीली और खड़ी चढ़ाई वाली थीं। ऐसे मुश्किल रास्तों पर आम गाड़ियां नहीं चल पाती थीं। इसी वजह से इंग्लैंड में बनी Land Rover Series-1 और उसके बाद के मॉडल यहां लाए गए। इन गाड़ियों की मजबूत बॉडी, दमदार इंजन और कठिन रास्तों पर चलने की क्षमता ने इन्हें लोगों की पहली पसंद बना दिया। धीरे-धीरे गांव के स्थानीय लोगों ने भी इन्हें अपनाना शुरू कर दिया।

स्थानीय लोगों के मुताबिक, एक समय ऐसा था जब मानेभंजन में 300 से ज्यादा लैंड रोवर गाड़ियां चलती थीं। समय के साथ इनकी संख्या कम जरूर हुई, लेकिन आज भी कई पुरानी गाड़ियां पूरी शान से सड़कों पर दौड़ रही हैं। सबसे दिलचस्प बात यह है कि इन गाड़ियों की देखभाल के लिए कहीं बाहर नहीं जाना होता है गांव के मैकेनिक ही इन गाड़ियों को ठीक करते हैं। कई बार इनके पार्ट्स आसानी से नहीं मिलते, इसलिए लोग पुराने पुर्जों की मरम्मत करके या खुद नए पार्ट तैयार करके इन्हें चलने लायक बनाए रखते हैं।

मानेभंजन आने वाले टूरिस्ट हमेशा इन लैंड रोवर गाड़ियों में बैठकर संदाकफू और आसपास की ऊंची पहाड़ियों की यात्रा करते हैं। यह रास्ता इतना कठिन माना जाता है कि यहां आज भी यही मजबूत गाड़ियां सबसे भरोसेमंद मानी जाती हैं। संदाकफू से साफ मौसम में कंचनजंघा और माउंट एवरेस्ट जैसी ऊंची हिमालयी चोटियों के शानदार नजारे दिखाई देते हैं। यही वजह है कि हर साल हजारों टूरिस्ट इस सफर का अनुभव लेने यहां पहुंचते हैं।

मानेभंजन सिर्फ अपनी लैंड रोवर के लिए ही नहीं जाना जाता। यहां की प्राकृतिक सुंदरता, शांत माहौल और स्थानीय नेपाली-बंगाली संस्कृति भी लोगों को खूब आकर्षित करती है। यहां मिलने वाला स्थानीय खाना और लोगों का अपनापन टूरिस्ट के सफर को यादगार बना देता है। मानेभंजन आज भी उस दौर की याद दिलाता है, जब गाड़ियों की पहचान उनकी मजबूती और भरोसे से होती थी। यहां की पुरानी लैंड रोवर सिर्फ वाहन नहीं, बल्कि गांव की विरासत और पहचान बन चुकी हैं।

दिल्ली में अदालत के फैसले के बाद गरमाई सियासत

भाजपा ने किया स्वागत
आप ने कपिल मिश्रा को घेरा

» सीएम रेखा गुप्ता का केजरीवाल पर तीखा हमला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। आईबी अधिकारी अंकित शर्मा हत्याकांड में अदालत द्वारा आम आदमी पार्टी के पूर्व पार्षद ताहिर हुसैन समेत दोषियों को आजीवन कारावास की सजा सुनाए जाने के बाद दिल्ली की राजनीति गरमा गई है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने फैसले का स्वागत करते हुए आम आदमी पार्टी और उसके राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल पर तीखा हमला बोला। उन्होंने सवाल किया कि ताहिर हुसैन की गिरफ्तारी के बाद भी पार्टी नेतृत्व उसके समर्थन में क्यों खड़ा रहा और क्या उसकी शह पर ही दिल्ली दंगों की साजिश रची गई थी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि अदालत के फैसले से न्याय की जीत हुई है और कानून व न्यायपालिका पर लोगों का भरोसा और मजबूत हुआ है। दिल्ली की जनता आम आदमी पार्टी से जवाब चाहती है कि हत्या के आरोप में गिरफ्तारी के बाद भी ताहिर हुसैन का बचाव क्यों किया गया। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह सवालों का जवाब आप को देना चाहिए।

राजनीतिक संरक्षण भी बेनकाब : आशीष सूद

दिल्ली सरकार में गृह विभाग के मंत्री आशीष सूद ने कहा कि अदालत का फैसला दिल्ली पुलिस और अभियोजन पक्ष की जांच की पुष्टि करता है। अंकित शर्मा की हत्या कोई सामान्य आपराधिक घटना नहीं थी, बल्कि साल 2020 की हिंसा और सांप्रदायिक तनाव की व्यापक साजिश का हिस्सा थी। सूद ने आरोप लगाया कि आम आदमी पार्टी ने ऐसे लोगों को राजनीतिक संरक्षण दिया, जिन्होंने हिंसा और अराजकता को बढ़ावा दिया। उन्होंने कहा कि अदालत ने अपना कानूनी दायित्व निभाया है और इससे कानून के शासन पर लोगों का विश्वास मजबूत हुआ है।

कपिल मिश्रा ने बचाया था

कपिल मिश्रा ने भी साधा निशाना

मंत्री कपिल मिश्रा ने आम आदमी पार्टी पर आरोप लगाया कि ताहिर हुसैन के दोषी ठहराए जाने और गिरफ्तारी के बाद भी पार्टी के कई नेताओं ने सार्वजनिक रूप से उसका बचाव किया। कुछ नेताओं ने मीडिया और सार्वजनिक मंचों पर ताहिर हुसैन के पक्ष में बयान दिए और दिल्ली दंगों के दौरान सड़कें बंद करने वालों का समर्थन किया।

भाजपा और ओवैसी का आदमी है ताहिर : भारद्वाज

ताहिर हुसैन से आम आदमी पार्टी ने पल्ला झाड़ते हुए उसे कपिल मिश्रा का आदमी बताया है। आप दिल्ली के प्रदेशाध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने आरोप लगाया कि वर्तमान प्रदेश सरकार में मंत्री कपिल मिश्रा ने ही ताहिर हुसैन को पार्टी में शामिल कराया और एमसीडी चुनाव में जबरदस्ती उसे पार्षद का टिकट दिलवाया था। आप मुख्यालय पर प्रेस वार्ता कर दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने आरोप लगाया कि दंगे के दौरान जिस घर में हथियार मिलने के आरोप लगे थे, उसी में कपिल मिश्रा का चुनावी और विधायक कार्यालय हुआ करता था। उन्होंने बताया कि इसी घर को अवैध निर्माण के दौरान एमसीडी गिराने आई थी और तब कपिल मिश्रा ने ही घर को बचाया था। मौजूदा समय में दिल्ली सरकार में मंत्री कपिल मिश्रा ने पूर्व में आप पार्टी से क्षेत्र में विधानसभा का चुनाव लड़ा था। सौरभ भारद्वाज ने कहा कि अदालत ने दिल्ली दंगे में पांच-छह लोगों पर आरोप सिद्ध होने के बाद सजा का आदेश दिया है। उन्होंने बताया कि भाजपा व उसके समर्थक आम आदमी पार्टी पर दंगा कराने का आरोप लगा रहे हैं। सौरव ने कहा कि इस बात के सुबूत हर जगह मौजूद हैं कि जैसे ही ताहिर हुसैन पर इस तरह के आरोप लगे, आम आदमी पार्टी ने तुरंत उसे पार्टी से निकाल दिया था। इसके उलट ऐसे दर्जनों उदाहरण हैं, जहां जघन्य अपराधों में शामिल लोगों को भाजपा ने सीने से लगाकर रखा। उन्होंने नित्यानंद, कुलदीप सेंगर और बृजभूषण सिंह पर आरोपों की बात कही।

तेजस्वी ने बीजेपी से कर ली डील : असित नाथ

» बांकीपुर उपचुनाव का रिजल्ट आने से पहले कांग्रेस का तीखा हमला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बांकीपुर विधानसभा उपचुनाव का मतदान संपन्न होने के बाद सभी दलों की नजर 3 अगस्त को आने वाले नतीजों पर टिकी है। इधर परिणाम से पहले ही महागठबंधन के भीतर सियासी खींचतान खुलकर सामने आने लगी है। कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रवक्ता असित नाथ तिवारी ने राष्ट्रीय जनता दल (राद) के नेता तेजस्वी यादव पर तीखे राजनीतिक हमले किए। उन्होंने बयान जारी कर गठबंधन की कार्यशैली और नेतृत्व पर गंभीर सवाल उठाए हैं।

असित नाथ तिवारी ने आरोप लगाया कि तेजस्वी यादव की अब महागठबंधन को मजबूत बनाए रखने में कोई रुचि नहीं रह गई है। उनका कहना है कि गठबंधन के सहयोगी दलों के बीच बेहतर तालमेल बनाने में राजद नेतृत्व पूरी तरह विफल रहा, जिसका असर चुनावी रणनीति और प्रदर्शन पर भी पड़ा। कांग्रेस प्रवक्ता ने राजद के पारंपरिकमाई (मुस्लिम-यादव) वोट बैंक को लेकर भी सवाल खड़े किए। उन्होंने दावा किया कि बांकीपुर उपचुनाव में मुस्लिम और यादव मतदाताओं का समर्थन एकजुट नहीं रहा।

भारत ने पहली बार जूडो में दो स्वर्ण जीत रचा इतिहास

» कॉमनवेल्थ गेम्स 2026: 23 पदकों के साथ अंकतालिका में 10वें स्थान पर है भारत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

ग्लास्गो। कॉमनवेल्थ गेम्स 2026 में शुक्रवार भारत के लिए अब तक का सबसे यादगार दिन साबित हुआ। जूडो में पहली बार दो स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रचा गया, जबकि एथलेटिक्स में नीरज चोपड़ा, यशवीर सिंह और तेजस्विन शंकर ने पदक दिलाए। दूसरी ओर बॉक्सिंग में भारत के सभी 10 मुक्केबाज फाइनल में पहुंचकर कम से कम रजत पदक पक्का कर चुके हैं। इन शानदार प्रदर्शनों की बदौलत भारत ने शुक्रवार को छह पदक अपने नाम किए और कुल पदकों की संख्या 23 तक पहुंचा दी। इसके बावजूद भारतीय दल पांच स्वर्ण, 12 रजत और छह कांस्य के साथ पदक तालिका में 10वें स्थान पर बना हुआ है।

जूडो में 48 किग्रा वर्ग में त्रिपुरा की अस्मिता डे राष्ट्रमंडल खेलों में जूडो का स्वर्ण जीतने वाली पहली भारतीय बनीं। उन्होंने कनाडा की हेडी क्वाच को गोल्डन स्कोर में हराया। पुरुष 60 किग्रा वर्ग में हर्ष सिंह ने ऑस्ट्रेलिया के जोशुआ कैट्ज को हराकर राष्ट्रमंडल खेलों में जूडो स्वर्ण जीतने वाले पहले भारतीय पुरुष बनने का गौरव हासिल किया। वहीं यामिनी मौर्य महिला 57 किग्रा वर्ग के गोल्डन स्कोर फाइनल में इंग्लैंड की एसिल्या टॉपराक से हारकर रजत पदक तक पहुंचीं। दो बार के ओलंपिक पदक विजेता नीरज चोपड़ा ने 85.83 मीटर के सीजन बेस्ट थ्रो के साथ रजत पदक जीता। पदार्पण कर रहे यशवीर सिंह ने आखिरी प्रयास में 85.41 मीटर थ्रो कर कांस्य अपने नाम किया। वहीं तेजस्विन शंकर ने 7976 अंकों के साथ डेकाथलन में कांस्य जीता।

श्रीलंका से टेस्ट खेलने के लिए बुमरा फिट घोषित

बंगलूरू। भारतीय क्रिकेट टीम को श्रीलंका दौरे से पहले बड़ी राहत मिली है। तेज गेंदबाजी के अगुआ जसप्रीत बुमराह ने बेंगलुरु स्थित बीसीसीआई सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में अनिवार्य फिटनेस टेस्ट पास कर लिया है। इसके साथ ही वह अगले महीने श्रीलंका के खिलाफ होने वाली दो मैचों की टेस्ट सीरीज में खेलने के लिए पूरी तरह फिट घोषित कर दिए गए हैं। बुमराह को हाल ही में इंग्लैंड के खिलाफ वनडे सीरीज के दौरान प्रभाव (इम्पैक्ट) चोट लगी थी। इसी वजह से उन्हें लॉर्ड्स में खेले गए तीसरे वनडे से बाहर बैठना पड़ा था। हालांकि अब मेडिकल टीम ने उन्हें खेलने की मंजूरी दे दी है। बीसीसीआई के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, जसप्रीत बुमराह अपनी इम्पैक्ट इंजरी से पूरी तरह उबर चुके हैं। उन्होंने सेंटर ऑफ एक्सीलेंस द्वारा निर्धारित सभी फिटनेस टेस्ट पास कर लिए हैं। उम्मीद है कि वह दोनों टेस्ट मैचों के लिए उपलब्ध रहेंगे, क्योंकि वह टीम की योजनाओं का अहम हिस्सा हैं।

राजस्थान में कांग्रेस के सभी नेता एकजुट

» पूर्व सीएम गहलोत ने भाजपा सरकार पर साधा निशाना, बोले- कांग्रेस में कोई नाराजगी नहीं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि राजस्थान में कांग्रेस के नेताओं में कोई नाराजगी नहीं है और सब एकजुट हैं। उन्होंने दावा किया कि राजस्थान में अगली सरकार कांग्रेस की ही बनेगी। पूर्व मंत्री महेन्द्रजीत सिंह मालवीय ने आदिवासी समाज के साथ बृहस्पतिवार को गहलोत से उनके निवास पर मुलाकात की। इस कार्यक्रम से पार्टी में गलत संकेत जाने संबंधी सवाल पर गहलोत ने संवाददाताओं से कहा, कोई गलत संकेत नहीं गया है। आदिवासी... कार्यकर्ता मिलने के लिए आए थे।

इस कार्यक्रम को लेकर पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष गोविंदसिंह डोटासरा द्वारा परोक्ष रूप से नाराजगी जताए जाने संबंधी खबरों की ओर इशारा करते हुए गहलोत ने कहा, हम सब एकजुट हैं। राज्य में हम अगली सरकार बनाएंगे। कोई नाराजगी ना अध्यक्ष जी (डोटासरा) को है, ना मुझे है। उन्होंने कहा, कांग्रेस एकजुट है। मैं बार बार कह रहा हूं कि देश को कांग्रेस की जरूरत है। कांग्रेस राहुल गांधी के नेतृत्व में, (मल्लिकार्जुन) खरगे साहब के नेतृत्व में एकजुट है। गहलोत ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नीत सरकार पर निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि 'राज्य में भ्रष्टाचार की हदें पार हो गई हैं।' उन्होंने राज्य में शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं के चरमराने का भी आरोप लगाया।

राज्य में शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाएं बेहाल

कांग्रेस नेता ने राज्य में शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं के चरमराने का भी आरोप लगाया। उन्होंने कहा, "हम चाहते हैं कि हालात में सुधार हो जिससे लोगों को फायदा हो क्योंकि अगर कुशासन होगा तो लोगों के काम नहीं होंगे।

फसल बीमा का किसानों से ज्यादा कंपनियों को मिल रहा लाभ : हुड्डा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने पीएम फसल बीमा योजना को किसानों के लिए छलावा बताते हुए कहा कि इसका लाभ किसानों से ज्यादा निजी बीमा कंपनियों को मिला है। उन्होंने कहा कि 18-19 में योजना के लगभग 24 लाख लाभार्थी थे जो 24-25 में घटकर करीब 11 लाख रह गए।

इस बार खरीफ सीजन की अधिसूचना भी 24 जुलाई को जारी हुई जिससे करीब 11.20 लाख किसानों को पंजीकरण के लिए मुश्किल से एक सप्ताह मिला है। चंडीगढ़ में जारी बयान में हुड्डा ने कहा कि 22-23 में हरियाणा में फसल बीमा के तहत 2,518.66 करोड़ रुपये का भुगतान हुआ। यह 23-24 में 265.23 करोड़ और 2024-25 में 262.6 करोड़ रुपये रह गया।

बीएसएनवी के छात्रों ने छोड़े पदकों पर तीर

» बालिकाओं ने मारी बाजी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। जनपदीय माध्यमिक विद्यालय तीरंदाजी प्रतियोगिता बप्पा श्री नारायण वोकेशनल इंटर कॉलेज-बीएसएनवी चारबाग लखनऊ में संपन्न हुआ। इसमें बच्चों ने अपना दम दिखाया।

-14 (बालक वर्ग) में आदर्श पाल 99 अंक -बाबू त्रिलोकी सिंह इंटर कॉलेज काकोरी लखनऊ 94 अंक-बाबू त्रिलोकी सिंह इंटर कॉलेज काकोरी लखनऊ ,आलोक यादव एवं अंश गौतम 68 एवं 64 अंक बप्पा श्री नारायण वोकेशनल इंटर कॉलेज,-17 (बालक वर्ग)108 अंक - बाबू त्रिलोकी सिंह इंटर कॉलेज काकोरी लखनऊ 102 अंक -बाबू त्रिलोकी सिंह इंटर कॉलेज काकोरी लखनऊ ,अनुराग विश्वकर्मा एवं अंशुमान सिंह एवं अंश गौतम - क्रमश: 88 एवं 84 अंक बप्पा श्री नारायण वोकेशनल इंटर कॉलेज-17 (बालिका वर्ग)- चंचल दुबे ,कशिश शर्मा ,अंजली कश्यप एवं गौरी कश्यप ,सभी बालिकाएं हनुमान प्रसाद रस्तोगी इंटर कॉलेज की छात्राएं हैं।-19 (बालक वर्ग)- शाश्वत- 124 अंक - बप्पा श्री नारायण वोकेशनल इंटर कॉलेज , अजय बप्पा श्री नारायण वोकेशनल इंटर कॉलेज -19 (बालिका वर्ग) अनन्याकश्यप,इप्शिता गुप्ता,पीहू शुक्ला एवं दीपिका साहू सभी बालिकाएं हनुमान प्रसाद रस्तोगी इंटर कॉलेज की छात्राएं हैं। प्रधानाचार्य उमाकांत बाजपेई ने विजेताओं सम्मानित किया।

कश्मीर में फिर दिखी सुरक्षा की लापरवाही

प्रवासियों पर आतंकी हमला

छत्तीसगढ़ के दो प्रवासी मजदूरों की मौत

विपक्ष ने केंद्र सरकार पर उठाए सवाल, सीएम ने मुआवजे का किया ऐलान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कश्मीर में पहलगाम में आंतकी हमले में मारे गए पर्यटकों की बरसी अभी बीते कु छ महीने ही हुए थे कि फिर से वहां पर एक हमले में छत्तीसगढ़ के दो प्रवासी मजदूरों पर आतंकियों ने बेहद नजदीक से गोलियां बरसाईं। इस हमले के बाद राज्य की सुरक्षा पर फिर सवाल उठ गया है। पूरे विपक्ष ने इस मुद्दे पर पीएम मोदी, गृहमंत्री शाह पर तीखा हमला बोला है। कांग्रेस, शिवसेना यूबीटी ने कहा सरकार ने फिर सुरक्षा में लापरवाही दिखाई।

बता दें दक्षिण कश्मीर एक बार फिर आतंक की खूनी साजिश का गवाह बना है। कुलगाम जिले के किलाम गांव में ईंट-भट्ठे पर काम करने वाले छत्तीसगढ़ के दो प्रवासी मजदूरों पर शुक्रवार को आतंकियों ने बेहद नजदीक से गोलियां बरसाईं। इस हमले में मौके पर ही दीपक की मौत हो गई थी, जबकि गंभीर रूप से घायल भूपिंदर ने शनिवार सुबह श्रीनगर के शेर-ए-कश्मीर इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेजअस्पताल में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। इसके साथ ही इस आतंकी हमले में मरने वालों की संख्या बढ़कर दो हो गई है।

वहीं सीएम उमर अब्दुल्ला ने मुआवजे का ऐलान किया। हमले के तुरंत बाद सुरक्षा बलों और जम्मू-कश्मीर पुलिस ने घटनास्थल पर पहुंचकर पूरे इलाके की घेराबंदी कर तलाशी अभियान शुरू किया। घायल भूपिंदर को पहले अनंतनाग के सरकारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल ले जाया गया था जहां ऑपरेशन के बाद उसकी गंभीर स्थिति को देखते हुए उसे श्रीनगर स्थित एसकेआईएमएस रेफर किया गया था। हालांकि डॉक्टरों के तमाम प्रयासों के बावजूद उसकी जान नहीं बचाई जा सकी।

आतंकी हमले की राजनीतिक दलों ने भी एक स्वर में निंदा की

पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने इसे अकल्पनीय रूप से क्रूर और निरर्थक हिंसा करार देते हुए कहा कि ये मजदूर अपने परिवार का पेट पालने के लिए सैकड़ों किलोमीटर दूर कश्मीर आए थे, लेकिन उन्हें आतंक का शिकार बना दिया गया। उन्होंने कहा कि निर्दोष लोगों की हत्या किसी भी सूरत में स्वीकार्य नहीं हो सकती। सत्तारुढ़ नेशनल कॉन्फ्रेंस ने भी घटना पर गहरी चिंता जताते हुए कहा कि सुरक्षा व्यवस्था को लेकर किए जा रहे दावों के बावजूद इस तरह की नृशंस हत्याएं बेहद चिंताजनक हैं। पार्टी ने सवाल उठाया कि जब सुरक्षा के बड़े-बड़े दावे किए जा रहे हैं, तब भी आतंकी आम नागरिकों को निशाना बनाने में कैसे सफल हो रहे हैं। वहीं, अपनी पार्टी के अध्यक्ष अल्ताफ बुखारी ने इस हमले को दुखद और अमानवीय बताते हुए दोषियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की मांग की। पीपुल्स कॉन्फ्रेंस ने भी निर्दोष नागरिकों को निशाना बनाए जाने को घोर निंदनीय बताते हुए पीड़ित परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की।

पीड़ित परिवारों को मिलेगा 10 लाख : उमर अब्दुल्ला

जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कुलगाम जिले में एक आतंकी हमले में दो मज़दूरों की हत्या की कड़ी निंदा की। एक्स पर एक पोस्ट में जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री ने इस घटना को कायरतापूर्ण और बेमतलब बताया और मारे गए लोगों के परिवारों को मुख्यमंत्री राहत कोष से 10 लाखरुपये की मुआवज़ा राशि देने की घोषणा की। एक्स पोस्ट में कहा गया मुख्यमंत्री ने पीड़ित परिवारों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की और दोहराया कि सरकार इस मुश्किल समय में उनके साथ मज़बूती से खड़ी है।

प्रवासी श्रमिकों की सुरक्षा पर उठा गंभीर सवाल

देखा जाये तो बीते छह वर्षों के आंकड़े भी घाटी में काम करने वाले प्रवासी श्रमिकों की सुरक्षा पर गंभीर सवाल खड़े करते हैं। इस दौरान अलग-अलग आतंकी घटनाओं में 25 से अधिक प्रवासी मजदूर अपनी जान गंवा चुके हैं। इससे पहले 18 अक्टूबर 024 को बिहार के 30 वर्षीय मजदूर अशोक चौहान की आतंकियों ने हत्या कर दी थी। इसके महज दो दिन बाद श्रीनगर-लेह राष्ट्रीय राजमार्ग पर निर्माणाधीन जेड-मोड़ सुरंग के बेस कैंप पर हुए बड़े आतंकी हमले में छह प्रवासी मजदूरों और एक कश्मीरी डॉक्टर की मौत हो गई थी। ताजा हमला इस बात का संकेत है कि आतंकी संगठन एक बार फिर आम नागरिकों और रोजी-रोटी कमाने आए प्रवासी श्रमिकों को आसान निशाना बनाने की रणनीति पर लौट आए हैं।

दक्षिण कश्मीर में पिछले दस दिनों के भीतर यह दूसरा बड़ा आतंकी हमला

यह हमला कई मायनों में बेहद चिंताजनक है। दक्षिण कश्मीर में पिछले दस दिनों के भीतर यह दूसरा बड़ा आतंकी हमला है। इससे पहले 22 जुलाई को अनंतनाग शहर में जम्मू-कश्मीर पुलिस के स्पेशल ऑपरेशंस ग्रुप (एसओजी) के एक पुलिसकर्मी की भी आतंकियों ने नजदीक से गोली मारकर हत्या कर दी थी। वहीं, अक्टूबर 24 के बाद यह पहला मौका है जब आतंकियों ने प्रवासी मजदूरों को निशाना बनाया है।

केरलम में बारिश से मची तबाही

भूस्खलन से चार लोगों की मौत, 8 जिलों में रेड अलर्ट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

तिरुवनंतपुरम। केरलम में मूसलाधार बारिश के चलते आई विनाशकारी बाढ़ और भूस्खलन ने भारी तबाही मचाई है। शनिवार को इडुक्की और कोट्टायम जिलों में अलग-अलग जगहों पर हुए भूस्खलन के कारण चार लोगों की मौत हो गई, जबकि कई अन्य लोगों के मलबे में दबे होने की आशंका है।

इडुक्की जिला प्रशासन के मुताबिक, मृत महिला की पहचान सुमति के रूप में हुई है। वह अडूरमाला क्षेत्र की रहने वाली थीं। शनिवार सुबह हुए भूस्खलन का मलबा उसेके घर पर गिर गया, पड़ोसियों ने उसके पति और बेटे को बचा लिया। दोनों घायल हो गए और उन्हें थोडुपुझा के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया।

नेशनल डिजास्टर रिस्पॉन्स फोर्स, फायर एंड रेस्क्यू सर्विसेज, पुलिस और राजस्व अधिकारियों के तलाशी अभियान के बाद सुमति का शव बरामद किया गया। कोट्टायम जिले के पूंजार में पय्यानीथोट्टम में भूस्खलन के दौरान एक युवक की मौत हो गई और उसकी मां मलबे के नीचे दब गई। मृतक की पहचान जॉनी के बेटे जोसेफ के रूप में हुई है और उसकी मां की तलाश जारी है, जिनके मलबे के नीचे दबे होने की आशंका है। जोसेफ को बचा तो लिया गया, लेकिन अस्पताल ले जाते समय चोटों के कारण उसकी मौत हो गई।

नॉन-बायोलॉजिकल प्रधानमंत्री को विक्टिम कार्ड खेलना बेहद पसंद है: जयराम रमेश

कांग्रेस नेता ने पीएम मोदी पर किया तीखा प्रहार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के इंस्टाग्राम वीडियो मैसेज को लेकर कांग्रेस हमलावर है। कांग्रेस ने कहा कि वो अपने राजनीतिक विरोधियों के खिलाफ बेहद कटु भाषा का इस्तेमाल करते हैं, इसके अलावा झूठ बोलने का भी आरोप लगाया है, कांग्रेस के राज्यसभा सांसद और वरिष्ठ नेता जयराम रमेश ने शनिवार (1 अगस्त) को एक्स पर पोस्ट कर पीएम मोदी को घेरा, उन्होंने कहा कि खुद को नॉन-बायोलॉजिकल बताने वाले प्रधानमंत्री को विक्टिम कार्ड खेलना बेहद पसंद है।

जयराम रमेश ने कहा कि वो अपने पूर्ववर्तियों और राजनीतिक विरोधियों के खिलाफ बेहद आपत्तिजनक और कटु भाषा का इस्तेमाल करते हैं। उन्हें बदनाम करने के लिए वे न केवल अपनी सार्वजनिक सभाओं में, बल्कि संसद के भीतर भी बार-बार झूठ फैलाते हैं। उन्होंने पीएम मोदी पर आरोप लगाते हुए कहा कि संसद के भीतर और बाहर गाली-गलौज करने वालों की पूरी फौज को खुली छूट देते हैं और उन्हें पूरा संरक्षण भी प्रदान करते हैं। कांग्रेस सांसद ने कहा कि आज पूरा देश इस बात का इंतजार कर रहा है कि प्रधानमंत्री नीट की पेपर लीक से ग्रस्त व्यवस्था के कारण लाखों युवाओं को हुई पीड़ा और छात्र आंदोलनों पर गृह मंत्रालय के संरक्षण में हुई बर्बर कार्रवाई के लिए माफी मांगें। उन्होंने आगे कहा कि पूरा देश राम मंदिर ट्रस्ट द्वारा किए गए चंदा चोरी, आस्था धोखा प्रकरण पर भी प्रधानमंत्री से माफी की अपेक्षा कर रहा है। जयराम रमेश ने कहा कि ऐसे मामलों की सूची बहुत लंबी है लेकिन बीती रात प्रधानमंत्री ने आत्ममुग्धता की पराकाष्ठा दिखाते हुए कहा कि उन्होंने हमारे युवाओं को माफ कर दिया है। यह देश और उन युवाओं का अपमान है, जिन्होंने उनकी सरकार के दौरान पीड़ा झेली है और जो पूरी तरह न्यायोचित रूप से उनसे माफी की मांग कर रहे हैं। उन्होंने आखिर में कहा कि प्रधानमंत्री की इंस्टाग्राम सभाएं अब किसी को बेवकूफ नहीं बना सकतीं।

गृह मंत्रालय नहीं गैंग चला रहे हैं शाह : संजय राउत

शिवसेना उद्धव ठाकरे गुट के सांसद संजय राउत एक बार फिर सरकार पर बरसे हैं। उन्होंने गृह मंत्री अमित शाह के पुणे दौरे को लेकर निशाना साधा है. संजय राउत ने कहा, रात के अंधेरे में गृह मंत्री पुणे में आए हैं। भारतीय जनता पार्टी ने उनके स्वागत में बड़े बड़े बैनर लगाएं है कि देश के चाणक्य का पुणे में आगमन हो गया है। संजय राउत ने कहा, यह सवाल गृहमंत्री से पूछना चाहिए. गृहमंत्री इस पद पर रहने वाले व्यक्ति नहीं है. वह गृहमंत्रालय नहीं चला रहे हैं, वह इस पद पर अब गैंग चला रहे हैं. वो गैंग व्यापारियों का है. वो गैंग गुंडों का है। संजय राउत ने कहा विपक्ष को खत्म करने का काम कर रहे हैं।

डीएम का आदेश ठेंगे पर, 10 महीने बाद दोबारा शुरू हुई सड़क की खुदाई

महानगर थाने के सामने का मामला, नगर आयुक्त बोले- होगी एफआईआर

पीडब्ल्यूडी ने अनुमति से इंकार किया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। राजधानी के अधिकारियों को डीएम के आदेश की भी परवाह नहीं है। बारिश में सड़क खुदाई पर रोक के बावजूद सड़क के चौड़ीकरण का कामचल रह। हांलाकि पीडब्ल्यूडी ने अनुमति से इंकार किया। वही नगर आयुक्त बोले एफआईआर की जाएगी। राजधानी के महानगर थाना के सामने सड़क चौड़ीकरण के लिए की जा रही खुदाई ने प्रशासनिक आदेशों पर सवाल खड़े कर दिए हैं।

हैरानी की बात यह है कि जिस कार्य का आदेश 29 अक्टूबर 25 को मुख्यमंत्री वैश्विक नगरोदय योजना के तहत नगर के विभिन्न चौराहों के पुनर्विकास एवं सौंदर्यीकरण के लिए लोक निर्माण विभाग द्वारा जारी किया गया था, उसकी याद ठेकेदार को पूरे 10 महीने बाद, वह भी मानसून के बीच आई। जबकि जिलाधिकारी विशाख जी ने वर्षा ऋतु में आम जनता को जलभराव, कीचड़ और दुर्घटनाओं से बचाने के लिए 8 जुलाई 2026 से 30 सितंबर 2026 तक सभी विभागों द्वारा सड़क खुदाई पर तत्काल प्रभाव से रोक लगाने के आदेश जारी कर दिए हैं। इसके बावजूद महानगर थाना के सामने सड़क खोदने का कार्य जारी रहने से कई गंभीर सवाल उठ रहे हैं।

वहीं नगर आयुक्त गौरव कुमार ने भी सख्त रुख अपनाते हुए कहा कि यदि कोई व्यक्ति या एजेंसी प्रतिबंध के बावजूद सड़क खोदकर कार्य कर रही है तो उसके खिलाफ सीधे एफआईआर दर्ज कराई जाएगी। अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि जब जिलाधिकारी का स्पष्ट प्रतिबंध लागू है, पीडब्ल्यूडी अनुमति से इंकार कर रहा है और नगर आयुक्त एफआईआर की चेतावनी दे रहे हैं, तो आखिर किसके संरक्षण में महानगर थाना के सामने सड़क खुदाई का काम चल रहा है?

जिलाधिकारी के आदेश प्रभावी : अधिशासी अभियंता

इस मामले में जब लोक निर्माण विभाग के अधिशासी अभियंता सतेंद्र नाथ से जानकारी ली गई तो उन्होंने स्पष्ट कहा कि बारिश के दौरान सड़क कटिंग या चौड़ीकरण की कोई अनुमति नहीं दी जा रही है। उन्होंने कहा कि जिलाधिकारी के आदेश प्रभावी हैं और वह स्वयं मौके की जांच कर आवश्यक कार्रवाई करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि यदि कोई पुराना आदेश रहा भी हो, तब भी वर्तमान में सड़क खुदाई की अनुमति नहीं दी जा सकती।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क, 2-डी सिटी मॉल, अंधेरी वेस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र - 400053। **विधि सलाहकार**: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी **4 पीएम** न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक **संजय शर्मा**
द्वारा **आस्था प्रिंटर्स**, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। **संपादक- संजय शर्मा**